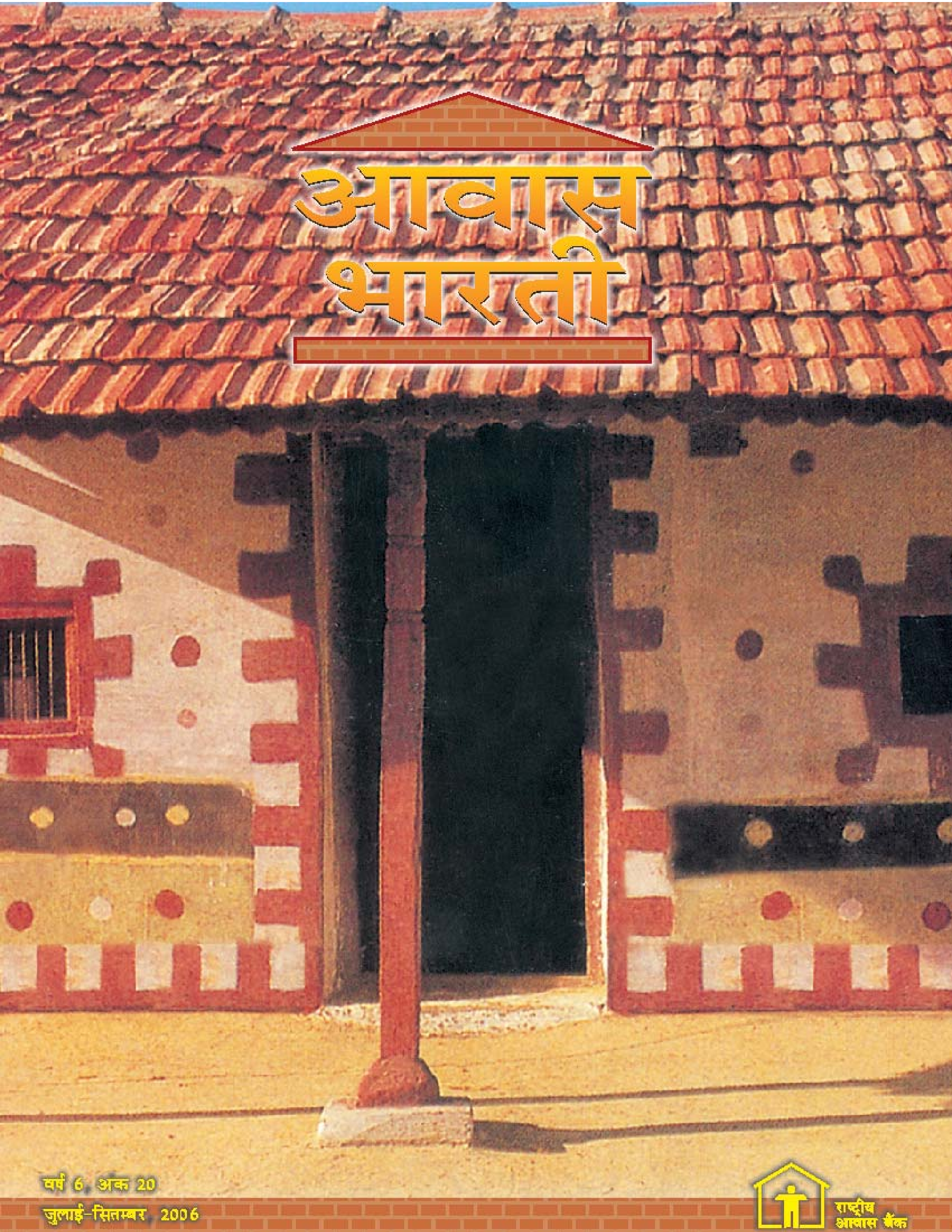

आवास भारती

वर्ष 6, अंक 20
जुलाई-सितम्बर, 2006

राष्ट्रीय आवास बैंक

हिन्दी चेतना मास - 2006

के मुख्य समारोह की झलकियाँ

आवास भारती

वर्ष 6, अंक 20, जुलाई-सितम्बर, 2006

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

पंजी. संख्या : दिल्ली इन/2001/6138

प्रधान संरक्षक

एस. श्रीधर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

सुरेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक

संयुक्त संरक्षक

पी. के. कौल, महाप्रबंधक

संपादक

ओ. पी. पुरी, सहायक महाप्रबंधक

उप संपादक

रंजन कुमार बरुन, प्रबंधक

संपादक मंडल

राकेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक
मि.गो. देशपाण्डे, प्रबंधक-मुम्बई कार्यालय से
किशोर कुंभारे, प्रबंधक
संजय कुमार, उप प्रबंधक
पूनम चौरसिया, सहायक प्रबंधक
ऋतु शर्मा, सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार, मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं। संपादक या बैंक का इनके लिए जिम्मेदार अथवा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं.
संपादकीय	2
रेडी मिक्स कंक्रीट	3
देश की आवास समस्या के समाधान में राष्ट्रीय आवास बैंक का योगदान	5
गृह निर्माण में विशेष सावधानियां	6
बिन पानी सब सून	8
संचार एवं इसका महत्व	9
सुरक्षित पीने योग्य पानी उपलब्ध कराना	10
लकी	15
भारत रत्न "उस्ताद बिस्मिला खां"	16
जम्मू और कश्मीर	17
राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा संबंधी गतिविधियां	19
आयुर्वेद-योग-एक्यूप्रेशर सभी संपूर्ण चिकित्सा पद्धतियां	20
राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार	21
काव्य सुधा	23
आपकी पाती	24

संपादक की कलम से

सुरक्षित एवं स्वस्थ आवास मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। तथापि, विश्व की 17 प्रतिशत (लगभग 100 करोड़) जनता के पास उपयुक्त आवास नहीं है और वे अनधिकृत कालोनियों, झोपड़ पट्टियों या नीले आकाश के नीचे जीवन गुजारने के लिए विवश हैं। 10वीं पंचवर्षीय योजना के आवास से संबंधित कार्यकरण समूह के अनुमान अनुसार भारत में लगभग 90 प्रतिशत आवासीय कमी गरीब लोगों से सम्बद्ध है। इसलिए गरीब लोगों के लिए सुलभ आवास उपलब्ध कराने की दिशा में अधिक कार्य करने की जरूरत है।

सरकार ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्दिरा आवास योजना, रात्रि विश्राम गृह इत्यादि अनेक योजनाएं बनाई हैं। पिछले कुछ वर्षो से स्वः सहायता ग्रुपों एवं गैर-सरकारी संगठनों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

पिछले दिनों अखबारों में ''हैबीटैट फॉर ह्यूमैनिटी'' नामक अन्तर्राष्ट्रीय अ-लाभकारी संगठन द्वारा महाराष्ट्र में स्थित लोनावाला के पास मलावी गांव में गरीबों के लिए मकान बनाने के लिए श्रमदान कैम्प के बारे में खबरें छापी थीं। इस कैम्प में दुनिया भर से आये हुए लगभग 20000 से भी ज्यादा स्वयंसेवी श्रमदान करने के लिए भाग ले रहे बताये गए हैं। उनमें अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री जिमी कारटर एवं उनकी पत्नी ने भी भाग लिया था।

इस खबर ने मानो हमारे दिल को छू लिया है और हमें यह सोचने के लिए विवश करती है कि अगर सभी नागरिक अपनी क्षमता अनुसार धन एवं श्रमदान करने के लिए आगे आ जायें तो देश में गरीबों के लिए आवास की कुछ समस्या थोड़े ही समय में सुलझ जायेगी तथा कोई भी नागरिक सर्दियों में ठिठुरती सर्दी से, गर्मियों में गर्म लू से अथवा अन्य प्राकृतिक घटनाओं की बलि नहीं चढ़ेगा।

ओ.पी. पुरी
संपादक

रेडी मिक्स कंक्रीट

मकानों को सस्ता और टिकाऊ बनाने की नई निर्माण सामग्री

राकेश कुमार,
सहायक महाप्रबंधक

साधारणतया कंक्रीट को भवन बनाने की साइट पर ही बनाया जाता है जिसके कारण इसमें सीमेंट, बजरी, रोड़ी और पानी आदि का अनुपात बढ़ता घटता रहता है। जबकि रेडी मिक्स कंक्रीट को बेहतर नियंत्रण में फैक्टरी में बना कर गीली हालत में ही ट्रकों द्वारा कार्य स्थल पर भेज दिया जाता है जिसको साइट पर इस्तेमाल करने से पहले कुछ भी मिलाने की जरूरत नहीं पड़ती। चूंकि सेन्ट्रल बैचिंग प्लांट बहुत ही कठोर गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली में कार्य करते हैं और मिश्रित कंकरीट के भेजने के एजीटेटर ट्रकों का इस्तेमाल इसे सेट होने से बचाता रहता है। इस प्रकार से, बनी कंकरीट को उच्च गुणवत्ता वाले फैक्ट्री निर्मित उत्पाद की श्रेणी में समझा जाता है और इससे बने हुये भवन अधिक टिकाऊ होते हैं।

रेडी मिक्स कंकरीट तैयार करने की तकनीक

1 सेन्ट्रल बैचिंग प्लांट

यह वह इकाई है जहां पर कंकरीट के विभिन्न अवयवों जैसे सीमेंट, बजरी, रोड़ी, पानी और एडमिक्सचरर्स को ठीक-ठीक माप में मिलाया जाता है। नवीनतम बैचिंग प्लान्टों में बेहतर गुणवत्ता के कंप्यूटरीकृत नियंत्रण व्यवस्था का इस्तेमाल किया जा रहा है। जरूरत के अनुसार अलग अलग चक्र में कंकरीट के अवयवों की मात्रा डिजाइन मिक्स के अनुसार बदली जा सकती है।

2 परिवहन मिश्रक

मिला हुई ताजी कंकरीट को घूमने वाले परिवहन मिश्रक की सहायता से विभिन्न निर्माण कार्य स्थलों तक पहुंचाया जाता है। परिवहन मिश्रक की क्षमता को निर्माण कार्य स्थल विशेष पर कंकरीट की जरूरत की मात्रा के अनुसार लिया जाता है। परिवहन मिश्रक कंकरीट को रास्ते में सख्त होने से बचाते हैं।

3 कंकरीट पम्प

रेडी मिक्स कंकरीट के निर्माता आजकल कंकरीट को सीधे शटरिंग पर पम्प द्वारा डालने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। इन पंम्पों से कंकरीट 100 मीटर ऊंचाई तथा 400 मीटर तक सीधी जमीन पर पम्प की जा सकती है। कंकरीट आसानी से पम्प हो सके, इसके लिए इसमें प्लास्टीसाइजर्स मिला लिये जाने है। इस से पानी की मात्रा भी कम डालनी पड़ती है और कंकरीट भी टिकाऊ हो जाती है। कंकरीट को पम्प की सहायता से डालने से श्रमिकों की जरूरत तथा अन्य कठिनाइयों से बचा जा सकता है। इसके इस्तेमाल से निर्माण की गति मे तेजी आती है।

रेडी मिक्स कंकरीट के लाभ

1. गुणवत्ता का आश्वासन

सेन्ट्रल बैचिंग प्लांट में कंकरीट के अवयवों को ध्यान में रखते हुए मिक्स डिजाइन तैयार किया जाता है और सारा काम नियंत्रित व्यवस्था में होता है तो गुणवत्ता का होना स्वभाविक है। कंकरीट में विभिन्न प्रकार के एडमिक्सचर मिलाकर उसके अलग - अलग तरह की उपयोगिताओं को उभारा भी जा सकता है।

2. अवयवों का सही माप

रेडी मिक्स कंकरीट बनाने से पहले ही अवयवों की स्थिति और साइट की जरूरत के इस्तेमाल के मिक्स डिजाइनर कर लिया जाता है और अवयवों की सही सही मात्रा ही ली जाती है। कंकरीट के अवयवों की मात्रा ही ली जाती है। कंकरीट के अवयवों की मात्रा सीमेंट की किस्म, बजरी का आकार और स्वरूप, पानी आदि का अनुपात आदि परीक्षणों के बाद प्राप्त किया जाता है।

3. अवयवों का कम बर्बाद होना

कंकरीट के विभिन्न अवयवों को अच्छी तरीके से पक्के फर्शों या धातु के निर्मित बड़े डिब्बों में रखा जाता है। जिसके कारण बजरी या रोड़ी इत्यादी का जमीन में मिट्टी के साथ मिलने, पानी के साथ बह जाने के कारण बर्बादी बच जाती है। इसके अतिरिक्त, पूर्व निर्धारित डिजाइन मिक्स के कारण मंहगे तत्त्व जैसे सीमेंट और एडमिक्सचर की खपत काफी घट गई है।

4. कई प्रकार की कंकरीट का उपलब्ध होना

कंप्यूटर नियंत्रित बैचिंग और प्रत्येक बैच के साथ विभिन्न डिजाइन मिश्रण में परिवर्तन की संभाव्यता के कारण, बनी बनाई कंकरीट वांछित उच्च ग्रेड और विभिन्न उपयोग के लिए तैयार की जा सकती है जबकि यह हाथ से कार्य स्थल पर बनाना संभव नहीं है।

5. श्रमिकों पर कम लागत

रेडी मिक्स की कंकरीट का सीधा फार्मवर्क में इस्तेमाल होने से,

श्रमिकों की जरूरत बिल्कुल कम हो जाती है जिससे काफी बचत होती है। इस का सब से अच्छा उपयोग ऐसे कामों में ज्यादा होना चाहिए जहां श्रमिकों की जरूरत ज्यादा होती है जैसे नींव, कंकरीट की सड़कों और बांधों इत्यादी में।

6. अवयवों को रखने में जगह की बचत

यदि पहले से बनाई गई कंकरीट का इस्तेमाल किया जाये तो परियोजना स्थल पर काम करने के जगह की बचत होती है क्योंकि कंकरीट के अवयवों की जरूरत नहीं होती। ऐसा होने से सडकों और फुटपाथों का दुरूपयोग भी नहीं होता और वाहनों के आवागमन में भी बाधा नहीं होती। इससे सामग्री का बिखराव भी कम होता है और नालियों और पाइपलाइनें बन्द भी नहीं होती।

7. शोर और धूल-प्रदूषण का रूकना

रेडी मिक्स कंकरीट तैयार करने वाले संयंत्र सामान्यतः नगर से बाहर लगाए जाते है और इसी कारण वहां पर शोर और धूल से होने वाला प्रदूषण भी कम होता है। कच्चे माल का भंडारण मशीनों से होता है, जिससे धूल से होने वाला प्रदूषण बहुत कम होता है।

8. रेडी मिक्स कंकरीट की लागत

प्रारम्भ में, जब तक रेडी मिक्स कंकरीट का उपयोग ज्यादा प्रचलित नहीं होता तब तक यह कार्य स्थल पर मिश्रित कंकरीट से लगभग 10 प्रतिशत से 15 प्रतिशत तक मंहगी होगी और जैसे-जैसे इसका उपयोग बढ़ेगा यह सस्ती होती जायगी। अगर कच्चे माल की बर्बादी, जगह की बचत, श्रमिकों की बचत और कंकरीट की गुणवत्ता आदि को देखा जाये तो आज भी स्थल से मिश्रण कंकरीट से यह सस्ती मानी जायेगी। रेडी मिक्स कंकरीट को थोड़ा सस्ता बनाया जा सकता है, अगर इस पर सेल्स टैक्स ना लगाया जाये तथा परिवहन मिश्रक ट्रक के आवागमन पर यातायात विभाग वालों की रोक-टोक न हो। समय की रफ्तार के साथ रेडी-मिक्स कंकरीट का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है एवं आशा की जाती है कि सरकारी प्रोत्साहनों एंव अन्य उपायों से रेडी-मिक्स कंकरीट का प्रयोग बढ़ेगा एवं यह लागत प्रभावी भी होगा।

फॉर्च्यून-500 सूची में भारत की छह कम्पनियां

वर्ष 2006 की फॉर्च्यून-500 ग्लोबल कम्पनियों में भारत की छह कम्पनियों को स्थान प्राप्त हुआ है, जबकि चीन की 20 कम्पनियां इसमें शामिल हैं, सूची में शामिल 6 भारतीय कम्पनियों में सर्वोच्च 153वां स्थान इंडियन ऑयल कार्पोरेशन (आईओसी) का है। सन्दर्भित 6 भारतीय कम्पनियों में 5 कम्पनियां तेल क्षेत्र की हैं, इनमें इंडियन ऑयल के अतिरिक्त रिलायंस इण्डस्ट्रीज, भारत पैट्रोलियम, हिन्दुस्तान पैट्रोलियम व ओएनजीसी शामिल हैं। सूची में गैर-तेल क्षेत्र की एकमात्र भारतीय कम्पनी भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) है। रिलायंस इण्डस्ट्रीज लि. (आरआईएल) फॉर्च्यून-500 में भारत की एकमात्र निजी क्षेत्र की कम्पनी है। रिलायंस पिछले वर्ष इस सूची में 41वां स्थान था, जो इस वर्ष 342वां हो गया है, ओएनजीसी ने अपनी रैंकिंग में 52 स्थानों का सुधार किया है, इसकी रैंकिंग पिछले वर्ष 454वीं थी। जो इस वर्ष की सूची में 402वीं रही है।

इस वर्ष की फॉर्च्यून-500 सूची में शीर्ष स्थान अमरीका की एक्सन मोबिल का है, जबकि दूसरा स्थान वालमार्ट स्टोर्स का है। रोजगार प्रदान करने के मामले में वालमार्ट स्टोर का स्थान पहला बताया गया है। फॉर्च्यून-500 की अग्रणी 10 कम्पनियों के नाम निम्नलिखित हैं-

1. एक्सन मोबिल
2. वालमार्ट स्टोर्स
3. रॉयल डच शेल
4. बीपी
5. जनरल मोटर्स
6. शेवरान
7. डेमलर क्रिस्लर
8. टोयोटा मोटर्स
9. फोर्ड मोटर
10. कांको फिलिप्स

प्रस्तुति : **अशोक कुमार**
प्रबंधक

देश की आवास समस्या के समाधान में राष्ट्रीय आवास बैंक का योगदान

राष्ट्रीय आवास बैंक की स्थापना सन् 1987 में की गई। उस समय आवास समस्या इतनी विकट नहीं थी, न ही बैंक एवं अन्य वित्तीय संस्थान आवास के लिए ऋण देने की आवश्यकता के बारे में जागरूक थे। आवास को अनर्जक निवेश माना जाता था। देश में मुश्किल से पाँच -छह संस्थान आवास -ऋण दे रहे थे। आवास निर्माण में निजी क्षेत्र का सूर्योदय अभी नहीं हुआ था। चन्द पब्लिक सैक्टर के विकास-संस्थान मुख्यत: हायर परचेज के आधार पर आवास उपलब्ध करा रहे थे। इन कमियों को ध्यान में रखते हुए तथा आवास वित्त के क्षेत्र में सुधारों की जरूरत को नजरअन्दाज न करते हुए सरकार ने 1987 में राष्ट्रीय आवास बैंक की स्थापना की और बैंक ने सन् 1988 से काम करना शुरु कर दिया।

आवास क्षेत्र, मुख्यत: आवास वित्त क्षेत्र के लिए शीर्षस्थ संस्थान के रुप में रा.आ.बैंक की स्थापना से आवास क्षेत्र की समस्याओं के बारे में नई सोच का दौर शुरु हुआ। नये-नये वित्तीय संस्थान खुलने लगे। बैंक स्वयं आवास-वित्त उपलब्ध कराने के लिए उस समय रजामंद नहीं थे। रा.आ.बैंक के अनुनय एवं प्रोत्साहन से बैंकों ने आवास वित्त कंपनियाँ स्थापित करने की ओर रुचि दिखानी शुरु की। निजी क्षेत्र भी आगे आया। कुल मिलाकर मानो आवास वित्त कंपनियाँ (आ. वि. कं.) स्थापित करने की एक लहर सी चल पड़ी। नतीजतन् 1988 में 2 कंपनियों से बढ़ कर सन् 2000 में लगभग 385 आ.वि. कंपनियाँ देश में स्थापित हो गई थी।

रा.आ. बैंक ने जहाँ आ.वि. कंपनियाँ स्थापित करने के लिए अनुकूल माहौल देश में बनाया, वहीं उनकी सहायता के लिए पुर्नवित्त उपलब्ध कराने की व्यवस्था की। एक कहावत है 'माया बिन होय न भजन गोपाला', तो फिर वित्तीय सहायता के बिना संस्थान कैसे चलें। पुनर्वित्त ही नहीं, रा.आ. बैंक ने आ.वि. कंपनियाँ स्थापित करने के लिए निवेश का भी योगदान दिया। अत: देश में एक हजार से भी अधिक शाखाओं वाली आ.वि. कंपनियों का मानो जाल बिछ गया। क्या यह रा.आ. बैंक के बिना कभी संभव था? कदापि नहीं।

आ.वि. कंपनियों की सफलता एवं 1991 में शुरू किए गए वित्त क्षेत्र के सुधारों को ध्यान में रखते हुए बैंक भी आवास वित्त प्रदान करने के लिए एक दूसरे से बढ़ कर अभियान चलाने लगे। रा.आ. बैंक ने जहाँ बैंकों को भी पुनर्वित्त उपलब्ध कराया, साथ ही बैंकों द्वारा अपनाई जाने वाली हानिकारक नीतियों के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक को आगाह किया।

मात्र आवास वित्त से आवास-समस्या का समाधान संभव नहीं, यह सत्य रा.आ.बैंक को प्रारम्भ से ही मालूम था। इसीलिए विकसित भूमि उपलब्ध कराने के लिए रा.आ. बैंक ने विकास प्राधिकरणों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई। नई किफायती भवन-निर्माण- सामग्री बनाने वाली संस्थाओं को पूंजी की सहायता प्रदान की।

भवन निर्माण में बाधक नीतियों एवं कानूनों में सुधार के लिए बार-बार केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों को सुझाव दिए। आयकर के तहत विभिन्न रियायतों, स्टैंप ड्यूटी में कमी, भूमि अधिग्रहण अधिनियम में सुधार आदि के लिए रा.आ.बैंक के प्रयास सहायक रहे हैं। बैंक के इन प्रयासों से आवास क्षेत्र का देश की राष्ट्रीय-आय में योगदान 1% से लेकर 5-6% तक बढ़ा है। आवास वित्त क्षेत्र पिछले 5-6 वर्षों में लगभग 30% की दर से बढ़ा है। विदेशी निवेश भी इस तरफ आकर्षित हुआ है। कुल मिलाकर मानो आवास क्षेत्र देश के अहम उत्पादक क्षेत्रों में मुख्य भूमिका निभाने लगा है।

उपरोक्त डेवलपमेंट के बावजूद रा.आ.बैंक ने महसूस किया कि ग्रामीण क्षेत्र एवं गरीब वर्ग कदाचित आवास-अभियान से अछूता रहा हैं । इसलिए रा.आ.बैंक ने अपनी नीतियों में सुधार किए। ग्रामीण क्षेत्र में आवास वित्त को प्रोत्साहन देने के लिए अपनी पुनर्वित्त योजना के तहत ब्याज दर में रियायत प्रदान की। गैर सरकारी संगठनों के लिए विशेष योजना बनाई।

यही नहीं, देश के किसी भी क्षेत्र में अगर कोई प्राकृतिक आपदा आई तो रा.आ.बैंक कभी पीछे नहीं रहा। गुजरात का भूकम्प हो या दक्षिण भारत में आयी 'सुनामी' तूफान की आपदा। रा.आ. बैंक ने अपने सामर्थ्य अनुसार विशेष योजनाएँ बना कर प्रभावित लोगों की सहायता करने का भरसक प्रयास किया। तात्पर्य यह कि रा.आ. बैंक ने मात्र शीर्ष-संस्थान नहीं बल्कि एक 'महान्- हृदय- वाले-सजीव- संस्थान' के रुप में अपने दायित्व को निभाने का प्रयास किया है।

आवास की समस्या देश के सामने मुँह बाए खड़ी है। रा.आ. बैंक की सहायता से इस समस्या की गंभीरता से निश्चय ही जागरूकता आई है। कमी आई है। आशा है आने वाले समय में बैंक के सजग प्रयासों से यह समस्या और सुलझेगी और 'सभी देशवासियों के सिर पर छत' का इसका सपना साकार होगा!

गृह निर्माण में विशेष सावधानियां

मकान बनाने के विचार मात्र से ही आमतौर पर मन में दुविधा सी उत्पन्न होती है लेकिन थोड़ा सा प्रयास करने और सावधानी बरतने से इसे काफी हद तक दूर किया जा सकता है। मकान बनाने वाले व्यक्तियों के मार्गदर्शन के लिए निर्माण के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बातें नीचें दी गई हैं जिनका पालन करने से मकान न केवल टिकाऊ बनेगा बल्कि निर्माण की लागत में भी कमी आएगी:

नक्शा

सामान्यत: नक्शे का प्रारूप सोच विचार के साथ तैयार किया जाता है। असल में नक्शा बनाने का अर्थ, उपलब्ध जमीन के आधार पर यह तय करना है कि उसमें रहने-सहने के कमरे, भोजन कक्ष, रसोई, गुसलखाना और शौचालय की व्यवस्था कहां की जानी है। इसके अलावा इसमें यह भी दिखाया जाता है कि मकान का रूख क्या होगा और उसमें दरवाजे तथा खिड़कियां कहां-कहां बनाई जानी हैं।

मकान बनाने से पहले परिवार के सदस्यों तथा ऐसे व्यक्तियों, जो पहले मकान बना चुके हों, के साथ हर पहलू पर अच्छी तरह से विचार-विमर्श करना अत्यन्त जरूरी है। ऐसा करने से मकान के संबंध में अंतिम निर्णय लेने में मदद तो मिलेगी ही साथ ही गृह निर्माण की प्रक्रियाओं की भी जानकारी हासिल होगी।

नक्शा बनाने का काम काफी पहले शुरू कर दिया जाना चाहिए। इस काम में वास्तुकार/सिविल इंजीनियर आपके बहुत मद्दगार हो सकते हैं।

नींव

नींव मकान का महत्वपूर्ण अंग है। जमीन की भारवाहक क्षमता के आधार पर नींव कई प्रकार की हो सकती है। अपनी जानकारी के लिए अपने अड़ोस-पड़ोस से मालूम कर लें कि उन्होंने किस प्रकार की नींव बनाई है । यदि संभव हो तो जमीन की सुरक्षित भारवाहक क्षमता जानने के लिए उसकी जांच करवानी चाहिए ताकि नींव की कोटि, वास्तविक गहराई और चौड़ाई आदि का निर्धारण किया जा सके। नींव में सीढ़ीनुमा आकार में ईंटों से चिनाई की जाती है। नींव की चौड़ाई आमतौर पर 60 से 70 से. मी. रखी जाती है। तथा इसमें 1:6 अनुपात के सीमेंट तथा रेत मसाले का इस्तेमाल किया जाता है।

एक और दो मंजिल मकानों के निर्माण में सीमेंट कंक्रीट स्तंभों की कभी कभार ही आवश्यकता पड़ती है। यह पद्धति अपनाने से अतिरिक्त व्यय होता है और इसके अलावा निर्माण कार्य की प्रगति भी धीमी पड़ती है। ऐसे क्षेत्रों में जहां बढ़िया किस्म की ईंटें उपलब्ध हैं, चार मंजिले मकानों का निर्माण कंक्रीट स्तंभों के बिना किया जा सकता है।

जमीन का दीमक-रोधी उपचार करना चाहिए ताकि मकान को दीमक से बचाया जा सके।

सीलन रोधी रद्दा

कुर्सी स्तर पर सीलन-रोधी रद्दा (डी.पी.सी.) लगाया जाता है ताकि चिनी हुई ईंटों के माध्यम से जो भूमिगत जल ऊपर की ओर आता है उसे रोका जा सके। यह उपाय करने से दीवारों की सीलन को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके लिए 4 से.मी. मोटा सीलन रोधी रद्दा, सीमेंट, रेत और पत्थर रोड़ी में 1:2:4 के अनुपात से बनाया जा सकता है। इसके ऊपर, प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से 1.75 किलोग्राम की दर से 80 से 100 ग्रेड के गर्म बिटूमन की परत बिछाई जाती है। सीलन रोधी रद्दा लगाना अत्यंत आवश्यक है।

दीवारें

दीवारों का मुख्य काम अधिरचना (स्ट्रक्चर) के भार को नींव तक पहुंचाना तथा मकान में रहने वालों को उष्मीय सुविधा प्रदान करना और उन्हें मौसम के बदलते तेवरों से बचाना तथा अलग जगह आदि प्रदान करना है। दीवारों के निर्माण में ईंटें 1:6 सीमेंट रेत के मसाले में लगाई जाती हैं। अच्छी ईंटों की दीवार को 230 मि.मि. से अधिक रखने की आवश्यकता नहीं होती।

दीवारों की मजबूती, मूलरूप से इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें कितनी मजबूत ईंटें इस्तेमाल की गई हैं तथा सीमेंट रेत के मसाले का अनुपात क्या रखा गया है। दीवार की भार वहन क्षमता सीमेंट और मसाले के अनुपात 1:6 के स्थान पर 1:4 या 1:3 रखने से बढ़ाई जा सकती है।

दीवारों में खाली जगह जैसे दरवाजे और खिड़कियां आदि केवल वहीं बनानी चाहिए जहां उनकी आवश्यकता हो। जहां तक हो सके खिड़कियां तथा दरवाजे जहां दीवारें मिलती हों, उससे 35 सें.मी. दूर बनाए जाने चाहिए ताकि दीवारों में दरारें पड़ने की संभावना को कम किया जा सके। सभी खिड़कियों और दरवाजों के ऊपर प्रबलित सीमेंट कंक्रीट 1:2:4 और कम से कम 2 मुख्य 10 मि. मी. व्यास सरिये से बने उपयुक्त आकार के लिन्टल डाले जाने चाहिए। लिन्टल की मोटाई 150 मि.मी. रखी जा सकती है। यदि हफ्ते या दस दिन तक दीवारों की पानी से अच्छी तरह तराई की जाए तो इनकी मजबूती काफी बढ़ जाती है। एक बार अच्छी तरह सूख जाने के बाद दीवारों पर 1:6 सीमेंट-रेत के मसाले से पलस्तर

किया जा सकता है। पलस्तर की भी लगभग एक हफ्ते तक तराई की जानी चाहिए ताकि पर्याप्त मजबूती आ सके।

ऐसे क्षेत्र, जहां भूकम्प, बाढ़ और चक्रवात आने की संभावना हो, वहां गृह निर्माण में विशेष सावधानियां लेनी चाहिये। भूकम्प वाले क्षेत्र में लिन्टल स्तर इत्यादि पर कंक्रीट बैंड व दीवारों में खड़े सरिये के प्रबलन से संरचना में बहुत मजबूती आती है। इन बातों के संबंध में इंजीनियर की सलाह ली जानी चाहिए। ऐसे इलाकों में जहां ईंटें उपलब्ध न हों वहां पर दीवारें पत्थर मिट्टी के ब्लाकों या अन्य स्थानीय पदार्थों से बनाई जा सकती हैं।

फर्श/छत

फर्श/छत के निर्माण की सामग्री ज्यादातर स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों पर निर्भर करती है। पत्थर, लकड़ी, ईंटों, स्लेटों, टाइलों आदि से फर्श बनाई जा सकती है। जलवायु संबंधी परिस्थितियों के आधार पर छत या तो सपाट बनाई जाती है या ढलवां। ढलवां छतें उन इलाकों में अधिक उपयुक्त होती है जहां भारी वर्षा होती है या बर्फ पड़ती है।

सपाट फर्श/छत निर्माण के लिए आम प्रचलित पद्धति यह है कि इनका निर्माण प्रबलित सीमेंट कंक्रीट से किया जाए। इस पद्धति में ढूला बांधा जाता है और तख्त बंदी की जाती है। इस प्रकार बनी सपाट सतह पर लोहे के सरिये बिछाये जाते हैं और बाद में 1:2:4 अनुपात वाला सीमेंट कंक्रीट बिछा कर समतल सतह बनाई जाती है।

गृह निर्माण के लिए इंजीनियर की राय लेना अच्छी बात है तथा फर्श/छत के लिए डिजाइन भी उन्हीं से बनवाना चाहिए। उपयुक्त डिजाइन तैयार करने के उपरांत वह आपको यह बता सकेगा कि अपेक्षित सरिये का माप क्या होना चाहिए और उसका फासला कितना रखा जाना चाहिए। इसके साथ ही वह आपको इस बारे में भी राय देगा कि फर्श/छत के कंक्रीट स्लैब की मोटाई कितनी होनी चाहिए। ऐसा करने से काफी किफायत की जा सकती है। वरना आमतौर पर जितने सरिये की जरूरत होती है उससे लगभग दुगुना सरिया लगा दिया जाता है। अत्यधिक सरिये के इस्तेमाल से फर्श/छत का भार तो बढ़ता ही है इसके अलावा यह इंजीनियरी दृष्टिकोण से असुरक्षित भी है। मकान के इन भागों का निर्माण उचित देख-रेख में करवाना चाहिए।

फर्श/छत के स्लैब पर लगभग 10 से 14 दिनों तक प्रतिदिन पानी डालकर उसकी अच्छी तरह तराई की जानी चाहिए। ऐसा करने से स्लैब में वांछित मजबूती आ जाती है। इस कार्य में किसी प्रकार की ढील नहीं दी जानी चाहिए। सही ढंग से तराई करते रहने के फलस्वरूप मकान का जीवन-काल बढ़ने के साथ-साथ दरारें पड़ने की संभावनाएं भी कम हो जाती है।

छत बनने तक मकान के ढ़ांचे का निर्माण हो चुका होता है। अब आपको मुख्य रूप से लकड़ी के काम, सम्पूर्ति, सेवाओं की स्थापना पर खर्च करना होता है। यह व्यय निर्माण लागत के करीबन 55 से 65 प्रतिशत के बीच बैठता है।

उपसंहार

यदि आप घर बनवा रहे हैं तो इंजीनियर की राय अवश्य लें व उसका पालन करें। इस संबंध में आपको कुछ जानकारी निर्माण संबंधी पुस्तकों में भी मिल जाएगी।

बी.एम.टी.पी.सी. से साभार

मौद्रिक एवं साख नीति की पहली त्रैमासिक समीक्षा में रेपो दरों मे वृद्धि

चालू वित्तीय वर्ष 2006-07 के लिए नई मौद्रिक एवं साख नीति की घोषणा भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 18 अप्रैल 2006 को की थी। इस नीति की पहली त्रैमासिक समीक्षा रिजर्व बैंक ने गत 25 जुलाई को जारी की है, इसके तहत रेपो दरों (रेपो दर एवं रिवर्स रेपो दर) में पुनः 0.25-0.25 प्रतिशत बिन्दु की वृद्धियां रिजर्व बैंक ने की हैं। इससे रेपो दर अब 7.0 प्रतिशत तथा रिवर्स रेपो दर 6.0 प्रतिशत हो गई है। तीन माह पूर्व ही, अप्रैल 2006 में मौद्रिक नीति की घोषणा के बाद जून 2006 में रेपो दर को 6.50 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.75प्रतिशत तथा रिवर्स रेपो दर को 5.50 प्रतिशत से बढ़ाकर 5.75 प्रतिशत रिजर्व बैंक ने किया था। नीति की पहली त्रैमासिक समीक्षा में बैंक दर (6.0 प्रतिशत) व नकद आरक्षण अनुपात (5.0 प्रतिशत) में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है, अप्रैल 2006 मे मौद्रिक नीति की घोषणा के समय भी इन दरों को इन्हीं स्तरों पर अपरिवर्तित रखा गया था।

चालू वित्तीय वर्ष 2006-07 में देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि की सम्भावित दर 7.5 - 8.0 प्रतिशत तथा वर्ष के दौरान मुद्रा स्फीति की दर 5.0-5.5 प्रतिशत दर रहने का अनुमान रिजर्व बैंक ने व्यक्त किया था। अपने इस पूर्वानुमानों में काई परिवर्तन रिजर्व बैंक ने नीति की पहली त्रैमासिक समीक्षा के तहत नहीं किया है।

रिजर्व बैंक द्वारा रेपो दरों में की गई 0.25-0.25 प्रतिशत बिन्दु की वृद्धि के प्रति उद्योग व्यापार जगत ने, विशेषतः लघु उद्योगों ने चिन्ता व्यक्त की है। इन वृद्धियों से देश में ब्याज दरों में वृद्धि होने की सम्भावना है।

बिन पानी सब सून

संजय कुमार
उप प्रबंधक

रहिमन पानी राखिए,
बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुस, चून

उपरोक्त दो पंक्तियों में ही रहीम ने जल के महत्व को जन-मानस के सामने इस बखूबी से रख दिया है कि अलग-अलग संदर्भ में रहीम के दोहे ही व्याख्या की जाती है। यूं तो जल की महत्ता काफी समय से लोग जानते आए हैं। 'जल ही जीवन है', 'जल है तो कल है' आदि बातों पर हमेशा से ज़ोर दिया जाता रहा है। अनगिनत कवियों, लेखकों, फिल्मकारों ने समय-समय पर अपनी कृतियों में जल संबंधी महत्व को इंगित किया है। वर्तमान समय में, कहीं अति वृष्टि तो कहीं अनावृष्टि, ने जल के कुशल प्रबंधन मुद्दे पर गंभीरता से विचार करने पर विवश कर दिया है तथा समय की भी यही मांग है। भोजन के बिना एक व्यक्ति दो माह तक जीवित रह सकता है लेकिन पानी के बिना एक सप्ताह तक ही जीवित रह सकता है।

जल सृष्टि के पांच तत्वों में से एक है तथा सभी सजीव प्राणी मुख्यत: पानी से बने हैं। साथ ही, मनुष्य के शरीर में भी 70% हिस्सा जल का ही है। भोजन के बिना तो एक व्यक्ति अधिकतम दो माह तक जीवित रह सकता है परन्तु पानी के बिना तो केवल एक सप्ताह तक ही जीवित रह सकता है। यह बात हम सभी जानते हैं कि पानी के बिना जीवन संभव नहीं है, किन्तु, इस बात को कम ही लोग जानते होंगे कि ग्लोबल एन्वायरनमेंट आउटलुक, 2000 के अनुसार, दुनियां की कुल आबादी का लगभग 20 प्रतिशत लोगों को पीने का पर्याप्त पानी नहीं मिलता है। इस संदर्भ में, एक आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय तथ्य यह है कि हमारी पृथ्वी का लगभग 70% भाग जलमग्न है। परन्तु, पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का 97% भाग समुद्र के रूप में होता है जो कि खारा होने के कारण पीने योग्य नहीं है। शेष 2 प्रतिशत पानी बर्फ के रूप में है और मात्र 1 प्रतिशत पानी ही ऐसा है जो पूरे विश्व के पीने के काम आता है। इन सबके बावजूद, विडंबना यह है कि इस 1 प्रतिशत पानी का लगभग 70% भाग प्रदूषित हो चुका है, जिससे समूचे विश्व में पानी की समस्या गंभीर होती जा रही है।

आइए, अब हम विश्व को छोड़, केवल अपने भारत देश की जल संसाधन व समस्या पर गौर करें। भारत की प्राकृतिक संरचना इस संदर्भ में सबसे बेहतर है। इस तथ्य को मानने में कोई दो राय नहीं हैं कि भारत एक जल संसाधन संपन्न राष्ट्र है तथा साथ ही औसत रूप से पर्याप्त जल उपलब्ध है। हमारे देश में प्रति वर्ष औसतन 40 करोड़ हैक्टेयर मीटर जल उपलब्ध होता जबकि कुल भूगर्भ जल लगभग 450 घन किलोमीटर अनुमानित किया गया है।

यह एक गंभीर विषय है कि भारत जैसे जल संसाधन संपन्न देश भी पानी की समस्या से ग्रस्त हैं। जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि से पानी की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। इस समय आलम यह है कि देश में लगभग 16 प्रतिशत आबादी को पीने योग्य पानी नहीं मिलता है। पानी की अनुपलब्धता अथवा अपर्याप्त उपलब्धता की वजह से देश के कई प्रांतों में तो मतभेद उत्पन्न होने लगे हैं। विगत में, कभी-कभी तो स्थिति ऐसी उत्पन्न हो गई थी कि कई लोगों ने खुदकुशी तक कर ली।

दिल्ली जैसे महानगर में पानी की समस्या तो और भी विकराल है। शुद्ध जल की उपलब्धता आज सामाजिक हैसियत का पैमाना बनता जा रहा है। भगवान की ओर से प्रदत्त मुफ्त में मिलने वाले प्राकृतिक संसाधन - जल, के लिए दुर्भाग्य हो ही नहीं सकता। पानी की यह अनुपलब्धता लोगों में कभी भी विद्रोह का कारण बन सकती है। वो दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया में जल के लिए युद्ध लड़े जाएंगे तथा पूरी दुनिया के लिए अस्तित्व का संकट पैदा हो सकता है। हम पानी बनाने का फार्मूला (H_2O) तो जानते हैं, परन्तु याद रहे कि इसके द्वारा हम पानी की कुछ बूंदें ही बना सकते हैं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि समय रहते जल की गंभीर समस्या (आधिक्यता या कमी) के कारकों का विश्लेषण गहनता से करते हुए उचित व कारगर उपायों को जनता तथा सरकार के समक्ष चुनौतीस्वरूप रखा जाए।

संचार एंव इसका महत्व

वंदना मेहरोत्रा
प्रबंधक

संचार प्रशासन का प्रथम सिद्धान्त माना जाता है। संचार संदेशों के विनियमन एवं पारस्परिक समझ के निर्माण की प्रक्रिया है। संचार शब्द में विचारों का आदान-प्रदान, विचारों की साझेदारी तथा भाग लेने की भावना सम्मिलित है। थियो हैमन के अनुसार संचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की सूचनाएं एवं समझ हस्तांतरित करने की प्रक्रिया है। न्यूमैन एवं समर के अनुसार संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के तथ्यों, विचारों सम्मतियों का पारस्परिक आदान प्रदान है। एलन के अनुसार – ''संचार एक व्यक्ति के मस्तिष्क को दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क से जोड़ने वाला पुल है'' इसके अन्तर्गत कहने सुनने तथा समझने की एक व्यवस्थित एवं अनवरत प्रक्रिया सम्मिलित है। अगर यह कहा जाए कि सामूहिक प्रयास में संप्रेषण नींव की भूमिका निभाता है तो गलत नहीं होगा। कोई भी प्रबंधकीय कार्य बिना प्रभावी संचार के संभव नहीं है जैसे बिना विद्युत प्रवाह के सारी मशीनरी तथा प्रकाश बिंदु बेजान हो जाते हैं उसी प्रकार बिना संचार तथा सूचना प्रणाली के संगठन का कार्य भी ठप्प सा हो जाता है। किसी भी संगठन की प्रभावशीलता के लिए उसकी प्रभावी निष्पादकता के लिए सार्थक संचार अपेक्षित है। प्रभावी संचार के अभाव में प्रबंध की कल्पना तक नहीं की जा सकती। प्रशासन के संचार का महत्व सर्वस्वीकार्य है। इस संबंध में हैमन कहते हैं ''प्रबंधकीय कार्यो की सफलता कुशल संचार पर निर्भर करती है। हैण्डरसन के अनुसार ''अच्छा संचार प्रबंध के एकीकृत दृष्टिकोण हेतु बहुत महत्वपूर्ण है।'' प्रशासनिक व्यवस्था में संचार का महत्व इस प्रकार है:

1. नियोजन एंव संचार – नियोजन यानी प्लानिंग एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक कार्य है। प्रशासन की सफलता कुशल नियोजन के प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। संचार न केवल योजना के निर्माण बल्कि उसके क्रियान्वयन दोनों के लिए अनिवार्य है। कुशल नियोजन हेतु अनेक प्रकार की आश्यकता एवं उपयोगी सूचनाओं, तथ्यों एवं आंकड़ों और कुशल क्रियान्वयन हेतु आदेश, निदेश एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

2. उत्प्रेरण एवं संचार- वरिष्ठ अधिकरियों द्वारा कनिष्ठ अधिकारियों को एवं अधिकरियों द्वारा कर्मचारियों को अभिप्रेरित करने के लिए संचार की आवश्यकता होती है। ड्रकर के अनुसार ''सूचनाएं प्रबंध का एक विशेष अस्त्र हैं। ''प्रबंधक व्यक्तियों को हांकने का कार्य नहीं करता वरन वह उनको अभिप्रेरित, निर्देशित और संगठित करता है। ये सभी कार्य करने हेतु मौखिक अथवा लिखित शब्द अथवा अंकों की भाषा ही उसका एकमात्र हथियार होती है।

3. समन्वय एवं संचार – समन्वय एक टीम द्वारा एक संगठन के सदस्यों द्वारा किए जाने वाले कार्यों, उनके प्रयासों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने में सहायक होती है। यह कहा जा सकता है कि संचार वह साधन है जिसके द्वारा किसी संगठन में व्यक्तियों को एक समान उद्देश्य की प्राप्ति हेतु परस्पर संयोजित किया जा सकता है।

4. संगठन एवं संचार – संगठन की कार्यप्रणाली में अधिकारों एवं दायित्वों का निर्धारण एंव प्रत्यायोजन करना और अधिकारियों व कर्मचारियों को उनसे अवगत कराना संगठन के क्षेत्र में आते हैं। ये कार्य भी बिना संचार के असंभव हैं। चेस्टर बर्नाड के शब्दों में ''संचार की एक सुनिश्चित प्रणाली की आवश्यकता संगठनकर्ता का प्रथम कार्य है।''

5. नियंत्रण एवं संचार – नियंत्रण द्वारा प्रबंधक यह जानने का प्रयास करता है कि कार्य पूर्व निश्चित योजनानुसार हो रहा है अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त वह त्रुटियों एवं विचलनों को ज्ञात करके यथाशीघ्र ठीक करने का प्रयास भी करता है। ये सभी कार्य बिना कुशल व त्वरित संचार प्रणाली के असंभव हैं

6 प्रभावशीलता – आज के परिप्रेक्ष्य में संगठन में यह बहुत जरूरी हो गया है कि स्टाफ के सदस्यों के बीच विचारों का मुक्त आदान प्रदान बना रहे। किसी संगठन की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि वहां के स्टाफ सदस्य आपस में विचारों का कितना आदान प्रदान करते हैं और वे एक दूसरे को कितना समझते हैं।

अत: यह बहुत जरूरी है कि संगठन में प्रभावी संचार प्रणाली हो एवं यह संचार प्रणाली सकारात्मक होने के साथ साथ अवरोधों से मुक्त हो।

हास्य कोना

एक कवि महाशय बहुत ही भुलक्कड़ प्रकृति के थे। यहां तक कि कभी-कभी तो वह अपने घर का पता भी भूल जाते थे। एक बार वह रेल में यात्रा कर रहे थे कि टिकट चैकर टिकट चैक करने आ गया। कवि महाशय टिकट ढूंढ नहीं पाए। टिकट चैकर ने कहा ''आराम से ढूंढ लीजिए, मिल जाएगी।''

दूसरे यात्रियों का टिकट चैक करने के बाद टी.टी. बाबू फिर आ धमके परन्तू कवि महाशय को अपना टिकट नहीं मिला। टी.टी. ने कवि को पहचान लिया और बोला ''कोई बात नहीं''। मुझे पूरा विश्वास है कि आपने टिकट खरीदा था। छोडिए।''

कवि महाशय बोले ''धन्यवाद, आप बहुत नेक व्यक्ति है। लेकिन मुझे टिकट तो अवश्य ढूंढना है। नहीं तो मुझे पता कैसे चलेगा कि मुझे उतरना कहां है ?''

''सुरक्षित पीने योग्य पानी उपलब्ध कराना''

राम निवास महला

''रहिम पानी राखिए बिन पानी सब सून''

हालांकि रहीम का उपरोक्त दोहा अलग सन्दर्भ में था, परन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में पेयजल के संकट को देखते हुए इसे अतिश्योक्ति नहीं कहा जा सकता।

वर्तमान में भारत में ही नहीं वरन् विश्व के अधिकांश भागों में भी पेयजल उपलब्ध कराना बहुत बड़ी समस्या है। विकासशील देश हों या पिछड़े देश, हर जगह पेयजल का संकट गहराया हुआ है, कहीं कम तो कहीं ज्यादा।

उपरोक्त समस्या को गम्भीरता से ना लिया गया तो वो दिन दूर नहीं जब पेयजल को लेकर हो रहा गृह युद्ध, क्षेत्रीय युद्ध अन्तर्राज्यीय युद्ध अपने विकराल रूप के साथ विश्व-युद्ध के हालात पैदा कर दे।

पेयजल :- पेयजल अर्थात पीने योग्य पानी परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में पेयजल की यही परिभाषा उपयुक्त व सम्पूर्ण नहीं है।

वैज्ञानिकों के अनुसार:- रिवर्स ओसमोमिस (R/O) प्रक्रिया तैयार 50TOSQ से 200TOSQ तक का पानी ही पीने योग्य समझा जा सकता है।

यूं कहें तो हर वर्ग इसे अपने ही ढंग से परिभाषित करता है।

अमीर तबके के अनुसार:- ''मिनरल वाटर''

मध्यम तबके के अनुसार:- सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध कराये जाने वाला नल का पानी

गरीब तबके के अनुसार:-प्यास बुझाने के लिए जो मिल जाए।

राजनेताओं के अनुसार:- चुनाव से पहले ''मिनरल वाटर'' चुनाव के बाद ''नो वाटर '' खैर!

परिभाषा चाहे कुछ भी क्यों ना हो ये पंक्तियां हर सन्दर्भ में उपयुक्त हैं।

''रेत, जिन्दगी हर रेगिस्तान की
सितारे, जिन्दगी हर आसमान की
वेशक, जल जिन्दगी हर इन्सान की।

भौतिक-जगत जिन पांच तत्वों से बना उनमें से एक है-जल और इस तरह सृष्टि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जल। हर वर्ष वर्षा कम होती है, आबादी बढ़ने के साथ-साथ जल की मांग बढ़ती जा रही है। अतः आगामी, 10 वर्ष, 20 वर्ष, 30 वर्ष 40 वर्ष तथा 50 वर्षो के बाद की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए 'जल को बचाने' और जन-जन को उपलब्ध कराने की दिशा में मेरे विचार निम्नलिखित है:

पेयजल की समस्या को मुख्य तथा चार भागों में बांटा जा सकता है।

(क) पानी के स्रोत जुटाना।

(ख) पानी को पीने योग्य बनाना।

(ग) जन-जन को उपलब्ध कराना।

(घ) दुरूपयोग को रोकना

(क) पानी के स्रोत जुटाना:- पानी की समस्या से निपटने के लिए सर्वप्रथम पानी के स्रोतों को समझना अनिवार्य है, जिन्हें निम्न वर्गो में बांटा जा सकता है:-

1. वर्षा
2. भूमिगत जल
3. समुद्र

1. वर्षा:- प्राचीनकाल से ही वर्षा, पानी का मुख्य एवं मूलभूत स्रोत रही है तथा भविष्य में भी मुख्य स्रोत रहेगी। सर्वप्रथम अधिक से अधिक वर्षा के उपाय खोजने होंगे जो मेरे विचार से निम्न है:

- जलवायु के अनुसार पहाड़ों, पोखरों, सड़क के किनारे, रेलवे लाइन के किनारे, जंगलों, फालतू जमीन तथा क्षेत्र की उपयोग में ली गई भूमि पर अधिक से अधिक पेड़ लगाना।
- समुद्र में नाभिकीय विस्फोट से कृत्रिम गर्मी पैदा करे। रेगिस्तान में नाभिकीय विस्फोट से कम दबाव का क्षेत्र बनाकर मानसून को आगे खींचना।
- पानी से भरे बादलों पर हेलीकाप्टर से केमिकल का छिड़काव कर कृत्रिम वर्षा कराना।

चूंकि वर्षा का अधिकांश पानी बहकर चला जाता है इसलिए सर्वप्रथम केन्द्रीय सरकार को स्पष्ट राष्ट्रीय नीति बनाकर ''नदियों को जोड़ने'' के कार्यक्रम को प्राथमिकता देनी चाहिए तथा बाढ़ लाने में सहायक नदियों को सूखी नदियों से जोड़ने पर बाढ़ प्रभावित व सूखाग्रस्त दोनों तरह के क्षेत्रों के लोगों को राहत मिलेगी।

नदियों को जोड़ने से निम्न प्रकार से पानी की उपलब्धता बढ़ेगी:-

- पानी बहने से रूक जायेगा।
- भूमिगत जलस्तर ऊपर आ जाएगा।
- कृषि व गैर कृषि कार्यो के लिए अधिक से अधिक पानी मिलेगा जिससे भूमिगत दोहन कम होगा।
- नदियाँ जोड़ने के अलावा, नदियों में बहने वाले पानी का निम्न प्रकार से भण्डारण किया जा सकता है।
- सतह पर बहने वाली नदी, नालों व झरनों के पानी को उदगम स्थान के पास से ही छोटे-छोटे एनिकर बनाए
- नदियों के बहाव पर विभिन्न बांध बनाइए
- नदियों को प्राकृतिक व हमिम झीलों से जोड़कर

- नदियों को छोटे-बड़े तालाबों से जोड़कर
- नदियों को सीधा नहरों से जोड़कर तथा नहरों से कुओं को रिचार्ज कर भूमिगत जलस्तर बढ़ाकर
- नदियों में बहने वाले पानी को रोककर भूमिगत जल बढ़ाने का एक नायाब तरीका यह भी हो सकता है:-

भूगर्भ वैज्ञानिकों का सहयोग लेकर नदियों की सतह से कई मीटर नीचे भूमिगत बेसिनों को चिन्हित कर (जो बड़ी चटानों के बीच की सूखी नदियानुमा है) नदियों के पानी को कुंओं द्वारा उन भूमिगत बेसिनों में डालकर बहुत दूर-दूर के इलाके का भूमिगत जलस्तर ऊपर लाया जा सकता है।

देश की अधिकांश जनता को ऊपर लिखे वर्षा के पानी के पारम्परिक भण्डार गृह, नदी, नाले, झरने, झील, बांध, तालाब, बावड़ी से ही पीने योग्य पानी की सप्लाई की जाती है इसलिए उपरोक्त वर्षा के अमृत तुल्य मीठे पानी के स्रोतों का निम्न प्रकार से ध्यान रखना होगा:

- आबादी वाले क्षेत्रों मे नदी, नाले, व झरनों के तट पक्के बनाये जाएं
- झरनों के नीचे बड़े-बड़े कुण्ड बनाये जाएं ताकि पहाड़ी क्षेत्र में लम्बे समय तक पीने योग्य पानी उपलब्ध हो सके।
- झीलों, बाधों, ऐनीकटों, तालाब-बावड़ियों की प्रति वर्ष खुदाई कर ऊपर से आई मिट्टी निकाल देनी चाहिए जिससे अधिक से अधिक पानी का भण्डार किया जा सके।
- वर्षा आने से पहले ही झीलों, बाधों, एनिकटों व तालाबों की पाल व रपट का निरीक्षण कर लेना चाहिए तथा इन सभी स्रोतों पर वार्निंग सायरन, निगरानी वगैरह की मुख्य व्यवस्था होनी चाहिए ताकि बांध, तालाब वगैरह को टूटने से बचाया जा सके।
- सम्भव हो तो इनके फर्श को पक्का बनवाना चाहिए
- अधिकांश झील, बांध व तालाबों के फर्श को पक्का करना सम्भव नहीं है तथा भण्डारित पानी का बहुत बड़ा हिस्सा रिसाव के जरिए भूमि में चला जाता है तथा कई बार विभिन्न लवणीय चट्टानों से गुजरता हुआ खारा भी हो जाता है। इसलिए इन उपरोक्त स्रोतों के पेंदे पर:-
- काली मिट्टी की परत बिछाकर
- सस्ती पॉलीथीन सीट बिछाकर ऊपर काली मिट्टी की परत लगाकर
- वाटर प्रुफ पदार्थो का उपयोग कर पानी के रिसाव को काफी हद तक रोका जा सकता है।

सुरक्षित भण्डारण के बावजूद पानी का बहुत बड़ा हिस्सा वाष्प बनकर उड़ जाता है। अत: इन सभी स्रोतों पर ग्लीसरीन जैसे केमिकल का छिड़काव करें जिससे वाष्पीकरण को रोका जा सके तथा ये केमीकल स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक न हों।

वर्षा के पानी से भरे गये उपरोक्त स्रोतों के पानी की प्रथम प्राथमिकता 'पीने' के लिए होनी चहिए न कि कृषि व गैर कृषि कार्यो की राजनीति। उपरोक्त दर्शाये गये सभी स्रोत बड़े स्तर के तथा सार्वजनिक दर्जे के हैं परन्तु आगामी वर्षो की समस्या से जूझने के लिए वर्षा के पानी को व्यक्तिगत पारिवारिक तथा ढ़ाणी स्तर की वाटर हारवेस्टिंग की प्रक्रिया अपनानी होगी। जिसे निम्न प्रकार से सफल बनाया जा सकता है:

तर्ज:- **घर का पानी घर में, खेत का पानी खेत में, गाँव का पानी गाँव में,**

- सरकार को स्पष्ट आदेश पारित कर, हर घर में परिवार या घर की साइज के हिसाब से पक्का टैंक (होद) बनाना अनिवार्य कर देना चाहिए ताकि घर की छतों पर गिरने वाला वर्षा का पानी इक्कट्ठा किया जा सके
- किसानों को अनुदान देकर, प्रोत्साहित कर खेत के ढ़लान की तरफ ''फार्म पोण्ड'' विकसित कराया जाये ताकि खेत का पानी खेत में रहे।
- खेतों में बने ग्रीन हाउस जो पॉलीथीन वा फाइबर ग्लास के बने होते है, जिन पर गिरने वाले वर्षा के पानी को टैंक में या सीधा कुँए में एकत्रित किया जा सकता है।
- शहरों में बड़े-बड़े स्टेडियम, मिल, फैक्ट्री, छात्रावास तथा होटल हैं जिनकी बहुत बड़ी-बड़ी छतें व शेड है जिन पर गिरने वाले वर्षा के पानी को नालियों द्वारा मुख्य टैंक से जोड़ा जा सकता है।
- देश में पक्की सड़कों का भी बहुत बड़ा क्षेत्र है, जिन पर गिरने वाले वर्षा के पानी को नालियों द्वारा आस-पास के खेतों के फार्म पोण्ड से या आसपास के तालाब से जोड़कर बहुत पानी इकट्ठा किया जा सकता है।
- गाँवों के आसपास कच्ची पहाड़ियों, पठार व ढलान वाली फालतू भूमि में ऊपर से नीचे की तरफ ''कन्टूर डिजाइन में खाइयाँ खोदकर वर्षा के पानी का बहाव रोककर भूमि में उतार का भूमिगत जल स्तर बढ़ाया जा सकता है।
- दूर दराज के ऐसे क्षेत्र जहाँ पर सार्वजनिक पानी की सप्लाई सम्भव ना हो तथा उस क्षेत्र में भूमिगत पानी भी खारा हो उस क्षेत्र में ऊपर दर्शाये चित्रानुसार प्रति परिवार टांका बनाया जाना चाहिए जिसकी साईज निम्न हो:
- व्यास लगभग 10 फुट व गहराई लगभग 40 फुट तथा जिसके चारों तरफ बीस-बीस फुट पक्का फर्श हो। वर्षा का पानी उक्त फर्श पर गिरकर टांके में भर जायेगा। उक्त टांके अनुदानित हो ।

(ख) भूमिगत जल:- पीने योग्य पानी का दूसरा मुख्य स्रोत है। भूमिगत जल को निम्न तरिकों से प्राप्त किया जा सकता है।

- **कुँअे-बावड़ी:**- जगह-जगह कुंअे-बावड़ी खोदकर भूमिगत जल निकाला जाता है तथा लोगों को उपलब्ध कराया जाता है।
- **पाताल तोड़ कुँअे:**- काफी गहरे व अधिक पानी वाले कुँओं से पानी निकाल कर पीने के लिए उपलब्ध कराया जाता है
- **नल कूप:**- बोरिंग खुदवा कर पानी निकाल कर सप्लाई किया जाता है।

चूंकि भूमिगत जल सीमित है तथा इसके जबरदस्त दोहन के कारण भूमिगत जल स्तर गिरता जा रहा है तथा लवणीय भी होता जा रहा है। अत: भूमिगत जल को पीने योग्य रखने व बचाने के निम्न उपाय करने चाहिएँ।

- वर्षा के पानी, नदियों, नालों, झरनों व फार्म पोण्डों के द्वारा अधिक से अधिक भूमिगत जल को रिचार्ज कराना चाहिए।
- कुंए से कुंए, व नलकूपों के बीच की दूरी 200 मीटर या इससे अधिक रखनी चहिए।
- कुंए, बावड़ी, नलकूप आदि से निकालने वाले पानी की प्रथम प्राथमिकता पीने के उपयोग के लिए की जानी चाहिए तथा कृषि व गैर कृषि कार्यो के लिए क्षेत्र-विशेष के हिसाब से बहुत जरूरी होने पर ही अनुमति प्रदान की जानी चाहिए।

(ग) समुद्र:- खारा पानी होते हुए भी समुद्र आज पानी का अन्तिम विकल्प है। परन्तु हो सकता है आने वाले कल को, पीने के पानी के लिए बहुत-कुछ समुद्र पर ही निर्भर रहना पड़े इसलिए निम्न उपायों को ध्यान में रखा जाए।

- समुद्र में ''नाभिकीय विस्फोट'' जैसे तरिकों से कृत्रिम गर्मी पैदा कर अधिक से अधिक वर्षा कराई जाये।
- पीने के अलावा दूसरे कार्यों में समुद्र के पानी को अधिक से अधिक काम में लाने के लिए तकनीक विकसित की जाये।
- नवीनतम तकनीक जैसे (R/o) रिवर्स ओसमोसिस प्रक्रिया अधिक से अधिक सरल, सस्ती व बड़े स्तर पर भी तैयार की जाये जिससे समुद्र के पानी को अधिक से अधिक पीने योग्य बनाया जा सके जिन पर गिरने वाले वर्षा के पानी को टैंक में या सीधा कुँओं में एकत्रित किया जा सकता है।

(घ) पानी को पीने योग्य बनाना: वर्षा के पानी के भण्डारण के समय उसमें मिट्टी तथा अनावश्यक घुलनशील लवण पानी में मिल जाते हैं जिन्हें निम्न तरीकों से हटाकर पानी को पीने योग्य बनाया जा सकता है:

- मानसून पूर्व बांधों, झीलों, तालाबों, नहरों की सफाई करायी जाय ताकि पानी कुछ कम गंदा हो।
- पानी के उपरोक्त स्रोतों में, ''फिटकरी'' जैसे पदार्थ छिड़क कर नाव के नीचे पंखा लगाकर नाव घुमाने से गंदगी मिट्टी अवक्षेप के रूप में पेंदे पर चली जायगी-चित्रानुसार
- उपरोक्त स्रोतों में कई बार पानी अधिक गंदला होता है जिसे सीधे ''फिल्टर प्लान्ट'' में डालने से फिल्ट बार-बार चोक हो जाते है। इसलिए नीचे दर्शाये गये चित्रानुसार गंदले पानी को पहले गुरूत्वाकर्षण बल व अवक्षेपण की तर्ज से निम्न प्रकार गुजारा जाता है।

चित्र के अनुसार उपरोक्त जलाशयों के गंदेले पानी को पहले ऊंचे स्थान पर ले जाकर वहाँ से नीचे की तरफ ढलान में बनाई गई नहर

नुमा चौड़ी 5-6 फीट नाली में छोड़ा जाता है। इस नाली में दो फीट ऊंची पट्टियों के अवरोध लगे होते हैं। एक पट्टी को पानी के ऊपर से गुजारा जाता है जबकि दूसरी पट्टी के नीचे 6 इंच खुली जगह होती है। इस प्रकार पानी ऊपर व नीचे होता हुआ 20-25 पट्टियों से गुजरता है। यहाँ पर अधिकांश मिट्टी व गंदगी गुरूत्वाकर्षण बल की तर्ज पर नहर में पट्टियों के पास रूक जाती है जिसे समय-समय पर साफ किया जाता है। यहाँ से पानी को बड़े टैंक में डाला जाता है जहाँ चित्रानुसार ''फिटकरी'' जैसा पदार्थ डालकर बिजली चालित नाव से अवक्षेपण कर ऊपर के साफ पानी को ''फिल्टर प्लांट'' में डालकर अधिक साफ करके पीने योग्य बनाया जा सकता है।

भूमिगत जल पानी, खारे पानी की झीलों के पानी तथा खारे कुओं के पानी को ''रिवर्स ओसमोसिस'' की बड़ी इकाई लगाकर तथा इजरायल जैसे देशों की नवीनतम तकनीक अपनाकर ''वर्ल्ड बैंक'' का सहयोग लेकर पीने योग्य बनाया जा सकता है। उपरोक्त सार्वजनिक बड़े स्तर के तरीकों के अलावा व्यक्तिगत निम्न तरीके अपनाये जा सकते हैं। गाँव से दूर खेतों में रहने वाले अपने ''फार्मपोण्ड'' में इकट्ठे पानी को नीचे दर्शाये चित्रानुसार ''कंकड़ बजरी'' के देशी फिल्टर से गुजारकर कुंए या टांकों में डालकर पानी को पीने योग्य बना सकते है। पानी को साफ करने की उपरोक्त सभी विधियों को अपनाने के बावजूद कई बार पानी योग्य नहीं होता है: अत: पारिवारिक स्तर पर काम में लेने

वाले सभी ''निम्न'' फिल्टर उपकरणों पर अनुदान देना चाहिए जिससे अधिक से अधिक लोग पीने योग्य पानी बनाने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर आत्मनिर्भर हो सकें:

1 प्लास्टिक व स्टील फिल्टर

2 एकवागार्ड

3 ओसामोसिस (प्लांट) मशीन

4 (R/O) रिवर्स ओसमोसिस मशीन

उपरोक्त साधनों के साथ-साथ कस्बों, शहरों व महानगरों में ओसमोसिस व रिवर्स ओसमोसिस के प्लांटों को अनुदानित प्रोत्साहन देकर बढावा देना चाहिए ताकि उच्च व मध्य दर्जे के परिवार, कई व्यवसायिक संस्थाऐं 5 लि. व 20 लि. पानी की पीडिंग का उपयोग कर आत्मनिर्भर हो सकें।

(स) जन-जन को उपलब्ध कराना:- पानी के भण्डारण व पीने योग्य बनाने के बावजूद देश में ''मौसमों'' में परिवर्तन, विशेषकर वर्षाऋतु में, स्वच्छ पानी में भी लाल दवा या ब्लिचिंग पाउडर मिलाना जरूरी है। कई क्षेत्रों में इसी प्रकार पानी से फ्लोराइड की मात्रा को कम करना भी बहुत जरूरी होता है।

पीने योग्य पानी को जन-जन तक पहुँचाने में भी बहुत विविधता है:

- नदी, नालों, बांधों, झीलें, तालाबों व कुँओं के फिल्टर किए पानी को बड़े-बड़े टंकियों में, इन टंकियों से नलों द्वारा घर-घर तक पहुँचाना।
- टंकियों से नलों द्वारा सभी सार्वजनिक स्थानों पर रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, अस्पताल, पार्क, स्कूल आदि सभी स्थानों पर पानी पहुँचाना। यहाँ पानी को प्याऊ या कूलर से भी जोड़ा जा सकता हैं।
- भूमिगत पानी सही होने पर हर गाँव, गली, मौहल्लों व सार्वजनिक स्थान पर ''हैण्ड पम्प'' लगा होना चाहिए।
- अस्पतालों में मरीजों के लिए हाइजेनिक पानी की सप्लाई की जानी चाहिए।
- गर्मी के मौसम में शहर व कस्बे जहाँ पानी की किल्लत हो रेलवे लाइन से जुड़े हो वहाँ रेलवे टैंकरों द्वारा पानी की सप्लाई की जानी चहिए।
- दूर दराज के गाँवों व रेगिस्तान में पानी की कमी के वक्त ट्रक व ट्रैकटर, टैंकरों द्वारा पीने योग्य पानी को पहुँचाना
- बैल गाड़ी व ऊँट गाड़ी पर टंकी लगाकर पानी पहुँचना
- समुद्र के बीच के टापुओं पर किल्लत के वक्त जहाज द्वारा
- पहाड़ी इलाके में किल्लत के वक्त टट्ठुओं द्वारा
- जिन क्षेत्रों मे बिजली की समस्या हो या बिजली ना हो वहाँ पानी को साफ करने व जन-जन तक पहुँचाने में निम्न स्रोत काम में लिये जा सकते है:
- डीजल पम्प सेटों द्वारा,
- पवन चक्की द्वारा
- सोलर एनर्जी द्वारा
- जहाँ पर पानी की सप्लाई बहुत नीचे से होनी हो: वहाँ पर बीच-बीच में पानी के बड़े टैंक बनाकर बार-बार लिफ्ट करके।
- गर्मियों में पानी की किल्लत के दौरान, सभी सार्वजनिक स्थानों पर, बाजारों में, रास्तों पर जगह-जगह प्याऊ लगाई जाए।
- गर्मियों में सभी सार्वजनिक स्थानों पर सही दर पर बिसलेरी उपलब्ध रहनी चाहिए ताकि सक्षम लोग उपयोग में ले सकें।

(द) दुरूपयोग को रोकना:- उपलब्ध पीने योग्य पानी का बहुत बड़ा हिस्सा व्यर्थ में बह जाता है, खराब हो जाता है तथा दुरूपयोग किया जाता है । अत: पीने के पानी का बचाव ही सबसे बड़ा व सस्ता उपाय है जिसे निम्न तरीके से सफल बनाया जा सकता है।

- स्वच्छ पानी के जलाशयों में मच्छली पालन, व सिंघाड़े की खेती के वक्त कीटनाशकों के प्रयोग पर पाबंदी लगाकर पानी का बहुत बड़ा हिस्सा खराब होने से बचाया जा सकता है।
- लीक फ्रूफ पाइप लाइनों को उपयोग में लेकर एक तरफ लाखों गेलन पानी व्यर्थ में बहने से रोका जायेगा वहीं टूटी-फूटी लाइनों से होने वाले जल को दूषित होने से बचाया जा सकता है।
- पीने लायक पानी व अन्य कार्यो को पानी की सप्लाई अलग-अलग होनी चाहिए।
- पानी की सप्लाई के वक्त बिजली बन्द रखनी चाहिए जिससे लोग बूस्टरों, मोटरों से अधिक पानी नहीं खींचे।
- ऐसे लोगों को दण्डित करना चाहिए तथा नल कनेकशन हमेशा के लिए काट देना चाहिए।
- पानी के नल से जुड़े भूमिगत होजों को बन्द करवाना चाहिए। सभी नलों में टोंटी लगी होनी चाहिए।
- बगीचों में पौधों में, वाहन धुलाई, फर्श धुलाई, पशु नहलाई, व मकान बनाने जैसे कार्यों में दूसरे दर्जे का पानी देकर पीने योग्य पानी बचाया जा सकता है।
- बाधों, झीलों, तालाबों व कुंओं के पीने योग्य पानी का बहुत बड़ा हिस्सा कृषि के उपयोग में आता है अत: किसानों को बागानी खेती की पैदावार का अच्छा मूल्य दिलाकर फसलचक्र बदलने पर मजबूर कर काफी मात्रा में पानी बचाया जा सकता है।
- कल कारखानों, प्रोसेस हाउस, शीतल पेय कम्पनियाँ तथा बिसलेरी जैसी कम्पनियों का 1500 (TOSQ) से अधिक के पानी के उपयोग की अनुमति दी जानी चाहिए। तथा इनके निर्माण की अनुमति आबादी से तथा सार्वजनिक जलाशयों से दूर देनी चाहिए ताकि सबसे बड़े ''जल प्रदुषण'' से बचा जा सके।
- कृषि में ड्रीप सिंचाई व फव्वारा सिंचाई का प्रोत्साहित कर के भी पानी का बहुत बड़ा हिस्सा बचाया जा सकता है।
- वाटर हारवबस्टिंग व पानी बचाव कार्यक्रम को महाअभियान के रूप मे लेकर 'जन चेतना' जागृत कर निम्न तरीकों से सफल बनाया जा सकता है।
- स्कूल में बच्चों को प्रशिक्षण देकर
- आंगन बाड़ी के कार्यकर्ताओं को जिम्मा सौंपकर
- एन.वी.व अखबारों में इसके विज्ञापन को अनिवार्य बनाकर
- नेताओं व अधिकारियों के भाषण के नियमित बिन्दु के रूप में देकर
- पानी के महत्व से सम्बधित फिल्में दिखाकर
- सम्बन्धित विज्ञापनों को प्रभावित बनाने के लिए, अमिताभ बच्चन, सचिन, शाहरूख खान जैसे सेलीब्रिटी चुने।
- गाँवों में पेयजल समस्या से सम्बन्धित समय-समय पर रंग मंच व नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जाए।

उपसंहार: ''अंतिम लेकिन कम नहीं'' हमें याद रखना चाहिए कि चाहे कितनी ही सर्वोतम तकनीक हम प्रयोग करें, चाहे कितनी ही योजनाएँ बनाई जाएं, जब तक कि हर व्यक्ति जागरूक नहीं होगा ये सब खोखली ही साबित होंगी। इसलिए सभी सरकारी योजनाओं/प्रयासों में जन-जन की भागीदारी, जिम्मदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। वर्षा की कमी व अत्यधिक भूजल दोहन के करण प्रतिवर्ष देश के विभिन्न क्षेत्र ''डार्क जोन'' में जाकर क्रिटिकल स्थिति में पहुँच रहे हैं। इसलिए एक तरफ सरकार को जल संरक्षण/जल संवर्धन व भूजल पुनर्भरण के लिए नदियाँ जोड़ने जैसी राष्ट्रीय नीति बनाकर वर्षा के पानी के लिए गांव स्तर तथा शहरी क्षेत्र में बहने वाले पानी के लिए माइक्रोप्लानिंग करनी चाहिए वहीं जन-जन को परिवारिक स्तर पर हर घर में टैंक बनाकर हर खेत मे फार्म-पोण्ड बनाकर जल संवर्धन में भागीदार बनाना चाहिए। इसी प्रकार प्रतिदिन नहाने, धोने में काम में लेने के बाद बहने वाले पानी को हर रिपवार द्वारा ''इजराइली तर्ज'' पर पुन: बगीचों, पौधों, वाहन धोने में काम लेना चाहिए वहीं सरकार द्वारा हर गाँव, कस्बे, शहर व महानगर में प्रतिदिन बहकर जाने वाले गन्दे पानी को परिशोधित कर पुन: कृषिकार्यो में काम में लेने के लिए सम्बन्धित प्लांट लगाने के स्पष्ट आदेश देना चाहिए। पानी की सफाई स्वच्छता के लिए एक तरफ सरकार को सिवरेज लाइन व पीने के पानी की सप्लाई लाइन को दूर व दुरूस्त रखना चाहिए। पानी के टैंकों, फिल्टर, टंकियों को समय-समय पर साफ कराते रहना चाहिए, वहीं जन-जन को पानी के कुँओं जलाशयों, हेण्डपम्पों, सार्वजनिक नलों के आस-पास कचरा डालने पर प्रतिबन्ध लगाकर, शौच आदि जाने वालों को प्रतिबन्धित कर, पशुओं व मनुष्य स्नान आदि पर प्रतिबन्ध लगाकर सरकार को सहयोग देना चाहिए। पीने योग्य पानी को (स्पष्ट परिभाषित (TOSQ टर्ममें कर) जलाशयों के पानी की प्रथम प्राथमिकता पीने के लिए साथ ही बागानी खेती को बढ़ावा देकर, ड्रिप सिंचाई को बढ़ावा देकर किसानों के फसल चक्र को बदल कर अधिक से अधिक पीने योग्य पानी बचाने में सरकार व किसानों को सहयोग करना चाहिए। पानी की महत्ता, संवर्धन, बचाव व जल प्रदूषण के लिए, बालफिल्मों, विज्ञापनों में फिल्म व क्रिकेट सितारों के साथ- साथ प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्रियों व धर्मगुरूओं का अधिक से अधिक सहारा लेना चाहिए ताकि लोगों कें दिमाग पर कारगर असर पड़ सके । पीने योग्य पानी की सभी तरह की समस्याओं को सुलझाने के लिए सरकारी खजाने, साधारण जन भागीदारी के साथ-साथ उद्योगपतियों, धनाढय व्यक्तियों, दान दाताओं, विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों को, आयकर, आयात निर्यात में कुछ छूट देकर प्रोत्साहित कर सहयोग की अपील करनी चाहिए जिससे अधिक से अधि क लोग आगे आकर पानी की समस्याओं को सुलझाने में मदद कर सकें। भागीदार बन सकें। गरीब के लिए भगवान बन सकें। जब खारे पानी से रस्सी की खाट पर स्नाकर खाट के नीचे टब में पुन: पानी इक्ट्ठा कर आत्मनिर्भर हो सकता है तो सरकार द्वारा घरेलू फिल्टर एकवागार्ड, (R/o) मशीन, हैण्डपम्प, आदि पर तर्क संगत, अनुदान देकर देश के बहुत लोगों को पानी के लिए आत्म निर्भर बना सकती है।

जन-जन को सन्देश:-

जल जीवन है, अमृत है, धन है!

परमेश्वर ने सृष्टि क्यों बनाई?

एस.डी. शर्मा

लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

एक प्रश्न उठता है ईश्वर का सृष्टि बनाने का क्या प्रयोजन है। यह बड़ा गम्भीर विषय है। परन्तु उत्तर भी सरल है। यदि एक कुम्हार सुंदर-सुंदर बर्तन, सुराही, खिलौने आदि बनाकर न दिखाये तो उसकी कार्य-कुशलता अर्थात कारीगरी को लोग कैसे जानेंगे या पहचानेंगे। यदि कुम्हार किसी से कहे कि मैं बहुत सुंदर मिट्टी के खिलौने बना सकता हूं, परन्तु जब तक वह बनाकर नहीं दिखा देगा, लोग विश्वास नहीं करेंगे अथवा उसकी कारागरी को नहीं पहचानेंगे। उसी प्रकार, भगवान यदि सृष्टि की रचना न करता, जीवों को विभिन्न योनियों में शरीर धारण कराकर प्रकृति-जगत के भौतिक सुखों का आनन्द भोगने एवं कर्म करने, तत्पश्चात् उनका फल भोगने का अवसर न देता तो जीव प्रलय-अवस्था के गहनतम अंधकार में अकर्मण्य एवं निठल्ले सुषुप्ति अवस्था में पड़े रहते। किसी भी कलाकार की योग्यता का आभास उसकी कृति एवं रचना देखकर ही मिलता है। उसकी रचना में उसकी क्षमता एवं योग्यता के दर्शन होते हैं। फिर परमेश्वर तो सबसे महान कलाकार है। समस्त ब्रह्माण्ड, लोक, लोकांतर उसकी रचना हैं। कल-कल करते झरने, सागर की उत्ताल तरंगें, बर्फ से लदी, ढकी पहाड़ों की चोटियां उसके विराट स्वरूप का दर्शन कराती हैं। अब हम वेद के अनुसार सृष्टि की रचना प्रभु ने किस क्रम से की, उसका उल्लेख करेंगे।

ओउम् ऋतं च सत्यं चाभीद्धतपसोऽध्यजायत।
ततो राज्यजायत तत: समुद्रोऽअर्णव:।।
समुद्रादर्णवा दधि संवत्सरोऽअजायत।
अहोरात्राणि विद्धद्धिश्वस्य मिषतोवशी।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो सव:।

अर्थात सर्वत्र प्रकाशमान ईश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेद विद्या और (सत, रज, तम) त्रिगुणात्मक प्रकृति उत्पन्न हुई। उसी परमात्मा के सामर्थ्य से प्रलय उत्पन्न हुई और उसी परमात्मा से महासमुद्र उत्पन्न हुए।

सारे ब्रह्मांड को सहज ही में अपने वश में रखने वाले परमेश्वर ने समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर- वर्ष और फिर इनके विभाग, दिन, रात, क्षण, मुहूर्त आदि रचे।

सब जगह को धारण और पोषण करने वाले परमात्मा ने जैसे पूर्व कल्प में सूर्य और चन्द्र रचे, वैसे ही इस कल्प में भी रचे हैं। ठीक उसी प्रकार द्यौलोक, पृथ्वी लोक, अंतरिक्ष और आकाश में जितने लोक-लोकांतर है, उनका निर्माण भी पूर्व कल्प के अनुसार किया है।

तत्पश्चात् इसी क्रम में ईश्वर ने ब्रह्मरात्रि, मनमन्तर और चतुर्युगी की रचना की। एक चतुर्युगी में चार युग अर्थात सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, इन चारों युगों की अवधि 4 करोड़ 32 लाख वर्ष होती है। 100 चतुर्युगी की एक सृष्टि होती है, जिसकी कुल अवधि 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है। इसे ब्रह्मदिन कहते है। उसके पश्चात् इतने ही दीर्घकाल तक प्रलय रहती है, जिसे ब्रह्मरात्रि कहते है। इस प्रकार सृष्टि-क्रम चलता रहता है।

''लकी''

वी. के. बादामी
उप महाप्रबंधक

मैं इससे सहमत हूं। लकी के रूप में शाही खानदान से किसी का पुनर्जन्म हुआ था। मैं इस बात को भी कभी नहीं भूलूंगा जब मैंने उसे पहली बार देखा था। यह 6 साल पहले की बात हैं। हम भूतल के किसी फ्लैट में जा रहे थे और सामान खोलने में लगे हुए थे कि संसार की सर्वाधिक सबसे सुंदर काली आंखों वाला गहरे भूरे रंग का कुत्ता जब अंदर आया तब उसका एक कान खड़ा हुआ था और दूसरा नीचे की ओर गिरा हुआ था।

मिनटों में ही उसने स्वयं को हमारे परिवार के नए सदस्य के रूप में स्थापित कर लिया। हम जल्दी ही समझ गए कि वह गली का शुभंकर था और सभी उसे प्यार करते थे। उसे लकी नाम इसलिए दिया गया था और भाग्यशाली (लकी) वह था भी। वह गर्मी के दिनों में हमारे घर के भीतर रहता था और भीतर की गर्मी से बचने के लिए वह नियमित रूप से नहाने का जोखिम उठाता था। वह लालची कभी नही था। और खाना भी उसने कभी नहीं मांगा। किन्तु वह गर्म चपाती और ठंडा दूध पसंद करता था। उसकी चेष्टाएं सभ्य थीं और वह किसी मक्खी तक को नहीं मारता था। तथापि, उसने गली मे बिल्लियों और संदिग्ध दिखने वाले छोकरों का पीछा करने मे कभी संकोच नही किया था।

गली में सभी लोग उसे चाहते थे-वह चौकीदारों का पक्का साथी था और उसने निवासियों को उनके अहसान के बदले प्यार जता दिया जिसने उसके शिष्ट व्यवहार पर टिप्पणी की। चाहे ये फैडीकोज़ के डॉक्टर थे (जिन्हें उनके दौरों के समय उसका मुंह बांधने की जरूरत नहीं होती थी) अथवा वे मित्र, जो घर आते थे।

हम कुछ दिनों में उस मकान की बराबर की गली के एक मकान में चले गए किन्तु वह वहीं रहा-उसे चक्रवर्ती परिवार ने हमसे ले लिया। वे लोग उसे प्यार करते थे और परिवार के बच्चे की तरह उसकी देखभाल किया करते थे।

किन्तु हमारे जाने के बाद भी, लकी हमारे घर का सदस्य बना रहा। वह अक्सर हमारे घर आ जाता और हम भी उसे देखने चले जाते। किन्तु दो महीने पहले हमें लकी की गली के चौकीदार ने सूचित किया-उन्होंने कहा कि वह अचानक बीमार पड़ गया था। और जब तक हम वहां पहुंचे (फ्रैडीकोज़ को एक आपात फोन किया) तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वह मर गया था। हम सभी ने स्वयं को सांत्वना दी कि जहां तक उसकी बात है, उसे अच्छी मौत मिली और कोई कष्ट नहीं हुआ। उसने अपना पूरा जीवन जिया (उसकी आयु का अनुमान 12 वर्ष लगाया जाता है) और सभी का प्यार पाया।

इस बिरले जानवर, यदि उसे ऐसा कहा जा सकता है, ने हम सभी को बहुत कुछ दिया और बदले में बहुत थोड़ा लिया। उसने, जितना कहा जा सकता हैं, उससे कहीं अधिक ढंग से हमारे जीवन को समृद्ध किया। उसकी याद में, हमसे किसी ने किसी एक दिन इकट्ठा होने का और उस पूरे दिन फ्रैडीकोज में जानवरों को भोजन खिलाने का कार्यक्रम प्रायोजित करने का विनिश्चय किया। हम उन अन्य जानवरों के लिए कम से कम इतना कर सकते हैं जो शायद इतने भाग्यशाली नहीं रहे हैं जितना कि हमारा लकी था।

श्रद्धांजली (भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खां)

किशोर कुमारे
प्रबंधक

उस्ताद बिस्मिल्ला खान नहीं रहे, लेकिन उनकी आखिरी ख्वाहिश जरूर पूरी होगी। शहनाई की धुन से देश की आजादी, शांति और सद्भावना के लिए शहीद हुए सेनानियों को श्रद्धांजली दी जाएगी।

'तारीख बदल सकती है लेकिन बिस्मिल्ला खान की धुन वही रहेगी। शहनाई इंडिया गेट पर जरूर बजेगी। उनके परिवार के सदस्य बिस्मिल्ला खान की शहनाई वहां रखेंगे, लेकिन बजाएंगे उनके शागिर्द।

करीब 75वर्षों तक संगीत प्रेमियों के दिलों पर राज करने वाले शहनाई के जादूगार भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खां का 21 अगस्त,2006 को इंतकाल हो गया। वे 90 वर्ष के थे। उन्हें गमगीन माहौल में वाराणसी के करबला फातमा कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक किया गया।

उस्ताद का जन्म 21 मार्च, 1916 को बिहार के भोजपुर में गांव डुमरांव में हुआ। उनके पिता का नाम पैंगम्बर बख्श था एवं उनका खानदानी पेशा डुमरांव रजवाड़ों के यहां शहनाई बजाना था। उस्ताद जब 6 साल के थे तभी से गंगा घाट पर घंटों रियाज किया करते।

गंगा तट पर बालाजी मंदिर की बुर्जियाय और मंगला गौरी मंदिर के चबूतरों पर गहरा रियाज चलता रहा। बिस्मिल्ला खान बनारस को अपना शहर और आशियाना मानते थे। यही वजह है कि विदेशों से मिले लाख प्रलोभनों के बावजूद उन्होंने इसे नहीं छोड़ा ।

उनकी शहनाई अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, इटली, नेपाल, स्पेन, हालैंड, दक्षिण अमेरिका और दुनिया के कई दूसरे देशों में गूंजी।

ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, नेपाल, अफगानिस्तान, स्पेन, हॉलैंड, दक्षिण अमेरिका और दुनिया के कई दूसरे देशों में गूंजी। उन्हें संगीत नाटक अकादमी, तानसेन पुरस्कार, शहनाई चक्रवर्ती, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, भारत शिरोमणि जैसे कई सम्मानों से नवाजा गया। 2001 में वह ऐसे तीसरे शास्त्रीय संगीतज्ञ बने, जिन्हें देश के सर्वाच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी और शांति निकेतन ने उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि दी।

शिया मुसलमान होने के बावजूद वह संगीत की देवी सरस्वती के अनन्य उपासक थे। बिस्मिल्ला ने एक बार कहा था कि संगीत एक सागर की तरह है और 90 साल बाद भी मैं मुश्किल से इसके किनारों तक ही पहुंच पाया हूं। इतनी प्रसिद्धि हासिल करने के बावजूद बिस्मिल्ला खां सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका कहना था कि संगीतज्ञ को सुना जाना चाहिए, उन्हें ज्यादा दिखने की जरूरत नहीं है।

जीवन के अंतिम दिनों में हालांकि उनकी स्थिति बहुत अच्छी नही थी। उनका 60 सदस्यों वाला संयुक्त परिवार कमोबेश उन्हीं पर निर्भर था। बीमारी के दौरान भी वह शहनाई को अपने सिराहने रखे रहे।

जिंदगी की आखिरी रात (20-21 अगस्त 2006) को उन्होंने सोने से पहले कहा था कि -'कल सुबह घर चलूंगा, तब बहुत सबेरे थोड़ा बहुत बजाऊंगा।' लेकिन वह सुबह न देख सके। बनारस में शहनाई का वह जादूगर, एक कभी न भरा जा सकने वाला सूनापन छोड़ गया।

उस्ताद का इंतकाल हो जाने पर लोगों ने कहा-

बिस्मिल्ला खान तो दरवेश और संत थे। -हरिप्रसाद चौरसिया

भारतीय संगीत के लिए सबसे दु:खद दिन। -पं. रविशंकर

कुदरती कला थी बिस्मिल्ला खान में। -किशन महाराज

वे शास्त्रीय संगीत के महात्मा गांधी थे। -पं. जसराज

बिरले ही ऐसे कलाकार मिलेंगे। -पं. राजन-साजन मिश्र

बीसवीं सदी के महानतम कलाकार थे। -श्याम बेनेगल

कलाकार के साथ बड़े दिल के इंसान थे। -पं. छन्नू लाल

टूट गया संगीत की दुनिया का स्तंभ। -गिरिजा देवी

मनुष्य जाति को दी कलात्मक ऊंचाइयां। -डा. बच्चन सिंह

साम्प्रदायिक सौहार्द्ध के प्रतीक थे। -पैट्रिक डिसूजा

शहनाई को मुकाम देना सिर्फ उस्ताद बिस्मिल्ला खान साहब के ही बस की बात थी। -अलका याज्ञिक

जम्मू एवं कश्मीर

प्रस्तुति
रंजन कुमार
प्रबंधक

क्षेत्रफल: 222,236 वर्ग कि.मी.; **राजधानी:** श्रीनगर (गर्मी),जम्मू (सर्दी); **भाषा:** उर्दू, कश्मीर, डोगरी, लद्दाखी, आदि; जिले: 14; **जनसंख्या:** 10,069,917; **पुरुष:** 5,300,574; **महिलाएं:** 4,769,343; **वृद्धि दर** (1991-2001); 29.04%: **जनसंख्या घनत्व:** 99; **लिंगानुपात (महिलाएं प्रति हजार पुरुष):** 900; **साक्षरता:** 54.46%; पुरुष: 65.75%; महिलाएं: 41.82%; **प्रति व्यक्ति आय (89-90):** 3420 रु.।

भू-आकृति: यह राज्य देश के उत्तरी कोने पर है। इसके उत्तर में चीन, पूर्व में तिब्बत और दक्षिण में हिमाचल प्रदेश पंजाब और पाकिस्तान है। राज्य की राजभाषा उर्दू है।

इतिहास: जम्मू और कश्मीर राज्य, जिस पर पहले हिंदू राजाओं और उसके बाद मुस्लिम सुल्तानों ने शासन किया, अकबर के शासन काल में मुगल साम्राज्य का अंग बन गया। 1756के आरंभ में अफगान शासन के बाद 1819में इसे पंजाब के सिक्ख राज्य में मिला लिया गया। 1846में रणजीतसिंह ने जम्मू प्रदेश महाराजा गुलाब सिंह को दे दिया। 1846 में सोबरांव के निर्णायक युद्ध के बाद अमृतसर की संधि के अधीन कश्मीर भी महाराजा गुलाब सिंह को दे दिया गया। उसके बाद 1947 में भारतीय स्वाधीनता अधिनियम पास होने के समय तक यह राज्य ब्रिटिश प्रभुत्व के अधीन रहा।

स्वाधीनता के बाद सभी रियासतों ने भारत या पाकिस्तान में मिल जाने का फैसला किया, किंतु कश्मीर रियासत ने कहा कि वह भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ पूर्ववत संबंध रखने का करार करना चाहता है। इसी बीच इस राज्य पर पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया और कश्मीर के महाराजा ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके 26 अक्टूबर, 1947 को कश्मीर राज्य का भारत में विलय कर दिया।

महाराजा के पुत्र युवराज कर्णसिंह 1950 में प्रतिशासक (रीजेंट) बने और आनुवांशिक शासन की समाप्ति (17अक्टूबर,1952)पर उन्हें, सदरे-रियासत पद की शपथ दिलाई गई।

पिता की मृत्यु (26 अप्रैल, 1961) पर युवराज कर्णसिंह को भारत सरकार ने महाराजा के रूप में मान्यता दे दी, किंतु कर्णसिंह ने निर्णय किया कि वह महाराजा की उपाधि का इस्तेमाल नहीं करेंगे।

जम्मू और कश्मीर राज्य 32^0-05'और 37-05' उत्तरी अक्षांश और 72^0-35'तथा 88^0-20'पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। भौगोलिक रूप से इस राज्य को चार क्षेत्रों में बांटा जा सकता है। पहला पहाड़ी और अर्द्ध-पहाड़ी मैदान जो कंडी पट्टी के नाम से प्रचलित है; दूसरा, पर्वतीय क्षेत्र जिसमें शिवालिक पहाड़ियां शामिल हैं; तीसरा कश्मीर घाटी के पहाड़ और पीर पांचाल पर्वतमाला तथा चौथा क्षेत्र तिब्बत से लगा लद्दाख और करगिल क्षेत्र। भौगोलिक तथा सांस्कृतिक रूप से राज्य के तीन जिला क्षेत्र जम्मू, कश्मीर और लद्दाख हैं। हस्तशिल्प यहां का परपंरागत उद्योग है। हाथ से बनी वस्तुओं की व्यापक रोजगार क्षमता और विशेषज्ञता को देखते हुए राज्य सरकार हस्तशिल्प को उच्च प्राथमिकता दे रही हैं। कश्मीर के प्रमुख हस्तशिल्प उत्पादों में मुख्य रूप से कागज की लुगदी से बनी वस्तुएं, लकड़ी पर नक्काशी, कालीन, शाल और कशीदाकारी का सामान आदि शामिल है। हस्तशिल्प उद्योग, विशेषकर कालीन उद्योग काफी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है।

कृषि

राज्य की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। धान, गेहूं और मक्का यहां की प्रमुख फसलें हैं। कुछ भागों में जौ, बाजरा और ज्वार उगाई जाती है। लद्दाख में चने की खेती होती है। जम्मू-कश्मीर राज्य सेब और अखरोट के लिए कृषि निर्यात जोन घोषित कर दिया गया है। कार्यक्रम के तहत, फल प्रसंस्करण और संरक्षण के लिए आवश्यक ढांचागत सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु राज्य को 100 करोड़ रुपये दिए गए है। राज्य में 2000 करोड़ रुपये के फलों का उत्पादन प्रतिवर्ष होता है। निर्यात हेतु फलों की गुणवत्ता सुधारने के लिए हस्तक्षेप योजनाएं (मार्किट इंटरवेंशन स्कीमें) शुरू की गई हैं ताकि फलों की ग्रेडिंग की जा सके।

25 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से बागवानी क्षेत्र से रोजगार मिलता है। बागवानी क्षेत्र के संवर्द्धन और विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए, नाबार्ड की सहायता से 19 सेटेलाइट फल बाजार लगाए जा रहे हैं जिन पर 70 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

बिजली

राज्य में बिजली क्षेत्र को उच्च प्राथमिकता दी गई हैं जिसमें राज्य की विशाल पनबिजली क्षमता के उपयोग पर विशेष बल दिया गया हैं जिसकी संभाव्य क्षमता 20,000 मेगावॉट हैं और अब तक केवल 1474 मेगावॉट क्षमता का ही दोहन किया जा सका है जिसमें राज्य क्षेत्र की 474.65 मेगावॉट क्षमता शामिल है।

शिक्षा

जनगणना 2001 के अनुसार राज्य की साक्षरता दर 54.46 प्रतिशत हैं; ग्रमीण साक्षरता 48.22 प्रतिशत और शहरी साक्षरता 72.17 प्रतिशत है। राज्य में पुरुष साक्षरता अनुमानत: 67.75 प्रतिशत और महिला साक्षरता 41.82 प्रतिशत है। राज्य में पांच विश्वविद्यालय और 41 कालेज हैं जिनमें निजी क्षेत्र के 8 कालेज भी शामिल है। इनमें सन् 2002 के 42,097 दाखिलों के मुकाबले 2004 में 60,386 दाखिले हुए।

स्वास्थ्य

राज्य में 11,351 बिस्तरों की क्षमता वाली 3340 स्वास्थ्य संस्थाएं हैं जिनमें 4788 डाक्टर है। जनसंख्या पर डाक्टर का अनुपात 1:2103 है यानी 2103 लोगों के लिए एक डाक्टर उपलब्ध है।

परिवहन

सड़कें

राज्य में लोक सेवा विभाग द्वारा 15,012 किमी. लंबी सड़कों का रखरखाव किया गया है। राज्य में 84 सड़क परियोजनाएं क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में है।

रेलवे

अब तक रेल सेवाएं केवल जम्मू तक उपलब्ध है। जम्मू -उधमपूर रेल लाइन के निर्माण का काम पूरा हो गया। श्रीनगर तथा बारामुला तक रेलमार्ग विस्तार का काम शुरू हो गया है। उधमपुर-कटरा और काजीगुंड-बारामुला रेल लिंक परियोजना एक राष्ट्रीय परियोजना है जो 2007 तक पूरा होने की संभावना है।

उड्डयन

श्रीनगर, जम्मू और लेह राज्य के मुख्य हवाई अड्डे हैं जो जम्मू और कश्मीर को हवाई मार्ग से देश के अन्य भागों से जोड़ते हैं। श्रीनगर हवाई अड्डे को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाया गया हैं और जम्मू हवाई अड्डे के भी आधुनिकीकरण का प्रस्ताव है।

पर्यटन स्थल

कश्मीर घाटी को पृथ्वी का स्वर्ग माना जाता है। श्रीनगर में चश्मेशाही झरना, शालीमार बाग, डल झील तथा गुलमर्ग, पहलगाम और सोनमार्ग और घाटी में अमरनाथ की पर्वत गुफा, तथा जम्मू के निकट वैष्णों देवी मंदिर, पटनीटाप और लद्दाख के बौद्ध मठ राज्य के प्रमुख पर्यटन केंद्र है। 15 सितम्बर को लद्दाख महोत्सव तथा जून में सिंधु दर्शन प्रसिद्ध त्योहार हैं।

त्योहार

आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी को रावण पर राम की विजय के प्रतीक रूप में दशहरा या विजयदशमी का त्योहार मनाया जाता है। शिवरात्रि भी जम्मू और कश्मीर में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई जाती है। राज्य में मनाए जाने वाले चार मुस्लिम त्योहार हैं - ईद-उल-फितर, ईदुलअजुहा, ईद-ए-मिलाद-उन्नबी और मेराज आलम। मुहर्रम भी मनाई जाती है।

लद्दाख का विश्व प्रसिद्ध हेमिस गुफा उत्सव जून महीने में मनाया जाता है। लेह में स्पितुक बौद्ध विहार में हर साल जनवरी में होने वाले पर्व में काली की प्रतिमाएं बड़े पैमाने पर प्रदर्शित की जाती है। इसके अलावा सर्दी के चरम का त्योहार लोहड़ी तथा रामबान और पड़ोस के गांवों में सिंह संक्रांति और अगस्त माह में भदरवाह में मेला पात मनाया जाता है।

-- x --

भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 12वीं बड़ी अर्थव्यवस्था

विश्व बैंक के ताजा आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2005 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की दृष्टि से भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 12वीं बड़ी अर्थव्यवस्था रही है। विश्व बैंक के एक प्रकाशन में विश्व की 15 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की सूची में सन्दर्भित वर्ष (2005) में भारत का सकल घरेलू उत्पाद 785.47 अरब डॉलर (35,34,615 करोड़ रुपए) बताया गया है। जबकि पहले स्थान पर रहे अमरीका में यह 124.6 खरब डॉलर है। 45.1 खरब डॉलर के जीडीपी के साथ जापान का इस सूची में दूसरा स्थान है, जबकि तीसरा व चौथा स्थान क्रमश: जर्मनी व चीन का है। ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, स्पेन, व कनाडा इस सूची में क्रमश: पांचवे, छठे, सांतवे, आठवें व नौवें स्थान पर हैं, जबकि 10वां व 11वां स्थान क्रमश: ब्राजील एवं द. कोरिया का है।

उल्लेखनीय है कि जीडीपी के निरपेक्ष मूल्य के आधार पर पहली बार 1999 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 12वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनी थी तथा 2003 तक इसका यही स्थान बरकरार रहा था, बाद में 2004 में भारत का यह स्थान सुधर कर 10वां हो गया था, 2005 में भारत की रैंकिंग जहां 10वीं से गिरकर पुन: 12वीं हो गई है, चीन की रैंकिंग सुधरकर छठी से चौथी हो गई है।

प्रस्तुति : एस.के. खरे, उप प्रबंधक

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

राष्ट्रीय आवास बैंक अपने स्थापन काल से ही भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन एवं इसके प्रभावी अनुपालन के लिए कटिबद्ध रहा हैं एवं बैंक ने हिंदी के प्रचार -प्रसार के लिए कई कदम उठाएं हैं। बैंक की हमेशा से यह नीति रही है कि प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाकर हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाया जाए और इसमें बैंक को आशातीत सफलता भी मिली है।

भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा संबंधी विभिन्न संवैधानिक उपबंधों जैसे: हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देना, धारा 3(3) के तहत आने वाले कागजातों को द्विभाषी रुप में जारी करना, विभिन्न रिपोर्टो व अन्य प्रकाशनों को द्विभाषी रुप में मुद्रित करना, स्टेशनरी की सभी मदों का द्विभाषीकरण, हिंदी चेतना मास एवं हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, क्षेत्रीय कार्यालय की राजभाषा प्रगति का निरीक्षण, जांच बिंदुओं की स्थापना एवं नियमित रुप से विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन लगातार किया जा रहा है।

बैंक के अधिकारियों को अपने दैनिक कार्य में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई है। इस वर्ष भी बैंक में 14 अगस्त, 2006 से 14 सितंबर, 2006 तक "हिंदी चेतना मास" का आयोजन किया गया है। इस दौरान 6 प्रतियोगताएं आयोजित गई एवं "योग" पर एक हिंदी वृत्तचित्र /फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। इसके अतिरिक्त, विपणन में हिंदी का प्रयोग" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। इस संगोष्ठी में बैंक की कारोबारी गतिविधियों के संबंध में विपणन नीति पर विचार विमर्श किया गया एवं कारोबार के संवर्धन के लिए हिंदी माध्यम से विपणन/प्रचार पर बल दिया गया।

मुख्य पुरस्कार वितरण समारोह में बैंक में पिछले कुछ वर्षो में तेजी से बढ़े हिंदी कार्यकलापों की बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री राज विकास वर्मा एवं श्री सुरेन्द्र कुमार ने मुख्य समारोह में भूरि भूरि प्रशंसा की एवं विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया। साल भर हिंदी में सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए चल वैजयंती व्यवसाय नियोजन एवं संवर्धन विभाग को प्रदान की गई ।

राष्ट्रीय आवास बैंक राजभाषा के प्रति अपने दायित्व को निभाते हुए "सभी के लिए आवास" के अपने अधिदेश को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है।

राष्ट्रीय आवास बैंक से हिंदी चेतना मास-2006 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगी अधिकारी गण

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता-(उप महाप्रबंधक एवं उससे उच्च स्तर के अधिकारियों के लिए)

क्रम सं0	प्रतियोगी अधिकारी	पुरस्कार
1.	श्री राधेश्याम गर्ग, महाप्रबंधक	प्रथम
2.	श्री राकेश भल्ला, महाप्रबंधक	दूसरा

हिंदी सुलेख प्रतियोगिता (अहिंदी भाषी अधिकारियों के लिए)

1	श्री एन. उदय कुमार, सहायक महाप्रबंधक	प्रथम
2	श्रीमती रीता, प्रबंधक	दूसरा

हिंदी पत्र लेखन (अहिंदी भाषी अधिकारियों के लिए)

1	श्री के. मुरलीधन, उप महाप्रबंधक	प्रथम
2	सुश्री रानु गांगुली, उप प्रबंधक	दूसरा

हिंदी नोटिंग व ड्राफटिंग प्रतियोगिता

1	सुश्री पूनम चौरसिया, सहायक प्रबंधक	प्रथम
2	श्री एस के खरे, उप प्रबंधक	दूसरा

हिंदी समाचार पत्र वाचन प्रतियोगिता

1	श्री विनीत सिंघल, प्रबंधक	प्रथम
2	श्री विशाल गोयल, क्षेत्रीय प्रबंधक एवं सुश्री यशोदा माल्वी, सहायक प्रबंधक-संयुक्त रुप से	दूसरा

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

1	श्री ओ. पी. पुरी, सहायक महाप्रबंधक	प्रथम
2	श्री संजय कुमार, उप प्रबंधक	दूसरा

उक्त के अतिरिक्त, हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के तहत निम्न अधिकारियों का चुनाव पुरस्कार हेतु किया गया है।

प्रोत्साहन योजना का नाम-हिंदी पत्रिका - "आवास भारती" में सर्वश्रेष्ठ लेख/काव्य का चुनाव

सर्वश्रेष्ठ तकनीकी लेख-अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष- लेखक-श्री पीयूष पांडेय, उप प्रबंधक सर्वश्रेष्ठ सामान्य लेख-कार्य क्षेत्र में तनाव, सुश्री चारु झींगरन,पत्नी श्री निमित्त झींगरन, सहायक प्रबंधक

सर्वश्रेष्ठ कविता - मां - एम बी राय, प्रबंधक

साल भर सर्वश्रेष्ठ कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

विजयी अधिकारी - सुश्री एम. अनुराधा, सहायक प्रबंधक
चल वैजयंती - विजेता विभाग-व्यवसाय नियोजन एवं संवर्धन

आयुर्वेद -योग -एक्यूप्रेशर सभी सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धतियां

जी.एन. सोमदेव
प्रबंधक

आयुर्वेद का चलन अति प्राचीन काल से हुआ किन्तु आचार्य चरक, सुश्रुत और अन्य महर्षि, मुनि तथा मनीषी, जिन्होंने आयुर्वेद ग्रंथों की रचना की, उनके समय में केंसर, टीबी, हेपेटाइटिस, मधुमेह, ब्लडप्रेशर आदि बीमारियां नही थीं और यदि थीं भीं, तो उनको तथा जनसाधारण को इसकी वैज्ञानिक जानकारी नहीं थी। आयुर्वेद का विकास करने में राजा-महाराजाओं, शासन-प्रशासन द्वारा रुचि नहीं लेने की वजह से ही इस पद्धति का विशेष विकास नहीं हुआ। नतीजा सामने है कि इस पद्धति में आज तक विद्वानों तथा चिकित्सकों ने मधुमेह, ब्लडप्रेशर आदि नापने की साधारण सी अपनी कोई विधि या यंत्र विकसित नहीं किया। आयुर्वेद एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है जिसमें रोगों का समूल उन्मूलन करने की क्षमता है मगर इस पद्धति पर अधिकांश लोगों की आस्था नहीं होने की वजह से ही अन्य वैकल्पिक पद्धतियां विकसित हुई। जिन लोगों ने आस्था और विश्वास के साथ उपचार लिया वे सम्पूर्ण रूप से बिना किसी साइड इफैक्ट के ठीक हुए।

ध्यान, योग, साधना, स्पर्श चिकित्सा (रेकी) आदि हमारे ऋषि मुनियों की देन है किन्तु जब यह सीमित लोगों तक ही मान्य थी। भगवान गौतम बुद्ध द्वारा ध्यान, योग व साधना को वैज्ञानिक रूप दिया गया तथा महर्षि पातंजलि ने उन विधियों को शीर्ष पर पहुंचाया। आज योग की जबरदस्त मार्केटिंग चल रही है और हर तरफ योग को अपनाया जा रहा है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि रोगी को केवल योग-एक्यूप्रेशर के ही भरोसे रहना चाहिए बल्कि उसे साथ-साथ औषधियां भी लेनी चाहिएं। योग वही है जो सहज हो, आसन वही है जो सुखकर हो। योगाश्रमों का जितना महत्व है उससे ज्यादा महत्व अस्पतालों का है। जो जान बचाए वही चिकित्सा पद्धति अच्छी समझें। योग और एक्यूप्रेशर को जरूर अपनाएं किन्तु इसका व्यापार करने वाले गुरु बाबाओं से सावधान रहना जरूरी हैं। स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है इस बात को समझें और नीम हकीमों से दूर रहें। श्रद्धा और अंधविश्वास का अंतर समझें।

एक्यूप्रेशर अंग्रेजी व लेटिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है सुई जैसी किसी वस्तु से दबाव डालना। शरीर के विभिन्न बिन्दुओं पर दबाव देकर रोग को ठीक करने की कला को एक्यूप्रेशर कहा जाता है। आधुनिक एक्यूप्रेशर पद्धति में मालिश (रगड़ और मरोड़), रंग, बीज तथा छोटे-छोटे मैग्नेट लगाकर उपचार किया जाता है। इस पद्धति में सभी प्रकार के रोगों का उपचार किया जाता है। कोई भी विपरीत प्रभाव या हानि नहीं होने की वजह से यह पद्धति सम्पूर्ण जगत में प्रसिद्ध हुई है। उपचार करना इतना सरल है कि एक कम पढ़ा-लिखा आदमी भी शरीर-चार्ट के अनुसार अपनी तथा दूसरों की भी चिकित्सा कर सकता है।

हमारा शरीर पांच भौतिक तत्वों जैसे-वायु, आकाश, जल, अग्नि एवं पृथ्वी से मिलकर बना है। बिना प्राण (ऊर्जा) के यह शव है। जीवित शरीर में ऊर्जा के संचार तंत्र में विसंगति आने से शरीर असहज हो जाता है। यही असंतुलन रोगों को जन्म देता है।

खान-पान तथा एक्यूप्रेशर की निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाकर अपने शरीर को स्वस्थ्य रखा जा सकता है:-

1. सुबह-सुबह उठकर तांबे के लोटे में रात को रखा हुआ कम से कम 2 गिलास पानी पीकर शौच जाएं।
2. प्रति शनिवार रात को सोते वक्त एक छोटा चम्मच खाना बनाने का तेल (कुकिंग ऑयल) दूध के साथ पीएं। इससे पेट में जमा गंदगी साफ होगी। कब्ज दूर होगा।
3. भोजन में तेल, चिकनाई, मिठाई व नमक का सेवन कम करें।
4. प्रतिदिन भोजन में 60 प्रतिशत सब्जी, 20 प्रतिशत रोटी चावल, 15 प्रतिशत मौसमी फल तथा चीनी एवं तेल की मात्रा 5 प्रतिशत होनी चाहिए। नमक बहुत थोड़ा खाएं।
5. भोजन को पानी की तरह (चबा-चबा कर) एवं पानी को भोजन की तरह (धीरे -धीरे) आत्मसात करें।
6. स्नान पश्चात् खाली पेट योग प्राणायाम करें। पुस्तक पढ़कर या टीवी देखकर। इसमें गहरी सांस लेने से रक्तसंचार ठीक होता है।
7. योग प्राणायाम सुबह-शाम दोनों वक्त करें। सप्ताह में एक दिन उपवास करें।
8. आवश्यकता होने पर आयुर्वेदिक दवा का सेवन करें। घर का बना सब्जी सूप पियें।
9. संभव हो तो प्रतिदिन सुबह-शाम कम से कम 1किलोमीटर पैदल चलें अन्यथा घर में ही कदम-ताल करें।
10. दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में रगड़ने के पश्चात् ताली बजावें। फिर, जैसे साबुन से हाथ धोते हैं, वैसे ही बिना साबुन पानी के अंगुलियां, हाथ, कलाई, एक-दूसरे को हाथ से रगड़े, मसलें और मरोड़ें। ऐसा 3-4 बार करें।
11. सुबह-शाम पावर मैट पर पांच मिनट कदमताल करें।
12. मेथी के कुछ दाने हाथ की हथेली पर रखकर तंबाकू की तरह अंगूठे से पूरी हथेली पर दो मिनट रगड़े। इससे आपकी किडनी हृदय एवं फेफड़ों तथा आंख का बीमा हो जाएगा।
13. रविवार को चित लेटकर नाभि में तेल भरें। ओंठ और एड़िया नहीं फटेंगी।
14. पाकेट, एक्सरसाइजर एवं सुजोक रिंग का 2 मिनट इस्तेमाल आपको नई ऊर्जा से भर देगा।
15. वर्ष में कम से कम 20 दिन रोज 25 उबले हुए सिंघाड़े जरूर खाएं। इससे स्त्री-पुरुषों के धातु एवं रक्त संबंधित रोग (श्वेत प्रदर, एनीमिया, नस कमज़ोरी, स्वपनदोष, वीर्य की कमी आदि) ठीक हो जाते हैं। कड़वे नीम की पत्तियों को उबालकर लगातार 10 दिन नहाने से चर्म रोग दूर हो जाता है। स्वस्थ व्यक्ति भी सप्ताह में एक बार नहाएं।

सुझाव - भोजन पश्चात् थकावट के वक्त, नशे में, रोगग्रस्त होने पर तथा गर्भावस्था में योग-एक्यूप्रेशर का प्रयोग न करें। गंभीर बीमारी में योग-एक्यूप्रेशर चिकित्सक का परामर्श अवश्य ले।

राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार

आवास वित्त कंपनियों का विनियमन और पर्यवेक्षण

आवास वित्त कंपनियों के विनियमन और पर्यवेक्षण से संबंधित नीति में परिवर्तन

1. अपने ग्राहक को जानने संबंधी दिशा-निर्देश और काले धन को वैध बनाने से रोकने संबंधी मानक-प्रतिवेदन प्रणाली

राष्ट्रीय आवास बैंक ने "अपने ग्राहक को जानो" संबंधी संशोधित मानदंड परिपत्र सं.एनएचबी(एनडी)/डीआरएस/पीओएल नं.13/2006 दिनांकित 10 अप्रैल, 2006 में प्रचारित किए हैं। इस बारे मे प्रतिवेदन प्रणाली को वित्तीय आसूचना इकाई-भारत के परामर्श से अंतिम रूप दिया जा चुका है और नकद कारोबार तथा संदिग्ध कारोबार के संबंध में आवश्यक जानकारी आवास वित्त कंपनियों में प्रचारित कर दी गई है।

2. मासिक विवरणी

आवास वित्त कंपनियों के प्राथमिक परिचालन पैरामीटरों पर जानकारी राष्ट्रीय आवास बैंक को नियमित रूप से उपलब्ध होती रहे, इसके लिए यह विनिश्चित किया गया हैं कि आवश्यक जानकारी राष्ट्रीय आवास बैंक के पास मासिक विवरणी के जरिए पहुंचनी चाहिए। आवास वित्त कंपनियों से अनुरोध किया गया है कि प्रत्येक माह के अंतिम दिन की जानकारी विहित प्ररूप में प्रस्तुत की जाए जिससे कि यह अनुवर्ती माह की 15 तारीख तक राष्ट्रीय आवास बैंक के पास पहुंच सके।

(संदर्भ:परिपत्र सं.एनएचबी (एनडी)/डीआरएस/पीओएल नं. 15/2006 दिनांकित 25जुलाई,2006)।

3. आवास वित्त कंपनियों के लिए उचित व्यवहार संहिता

इस बारे मे सर्वोतम व्यवहार बनाए रखने हेतु बैंक ने आवास वित्त कंपनियों के लिए उचित व्यवहार संहिता पर दिशा-निर्देश तैयार किए हैं। इस संहिता से ग्राहकों के साथ लेनदेन करने, पारदर्शिता बढ़ाने में न्यूनतम मानक स्थापित करके उत्तम और उचित व्यवहार की अपेक्षा की जाती है जिससे कि ग्राहक यह बेहतर समझ सके कि वह उपयुक्त रूप में सेवाओं से क्या आशा कर सकता/सकती है, उच्च परिचालन मानक प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा के जरिए, विपणन शक्ति प्रोत्साहित करे, ग्राहक और आवास वित्त कंपनी के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों का संवर्धन और आवास वित्त प्रणाली में विश्वास बढ़ाए।

इन दिशा-निर्देशों के आधार पर, राष्ट्रीय आवास बैंक ने सूचित किया कि प्रत्येक आवास वित्त कंपनी अपने निदेशक मंडल के अनुमोदन से, उसके द्वारा अंगीकार की जाने वाली एक उपयुक्त उचित व्यवहार संहिता तैयार कर सकती है। यह संहिता 30 सितम्बर, 2006 तक तैयार की जा सकती है।

4. वित्तपोषण संबंधी गतिविधियां

आवास वित्त संस्थानों का पुनर्वित्तपोषण

इस तिमाही में (15 सितम्बर, 2006 तक) बैंको को 1300 करोड़ रुपए का पुनर्वित संवितरित किया गया:-

(करोड़ रुपए में)

संस्थान	15.09.2006 तक संचयी संवितरण
आवास वित्त कंपनियां	13627.91
बैंक	13011.22
सहकारी समितियां	1580.77
योग	28219.90

5. संसाधन संग्रहण

बैंक ने 06 जुलाई से 06 सितम्बर की अवधि में विभिन्न स्रोतों से 2067.17 करोड़ रुपए जुटाए। विभिन्न स्रोतों से इस अवधि में जुटाई गई निधियां निम्न प्रकार से हैं:-

(करोड़ रुपए में)

क्र.सं.	स्रोत	06 जुलाई, 06 से 06 सितम्बर, 2006 तक जुटाई गई कुल निधियां
1.	वाणिज्यिक पेपर	789.60
2.	जमाराशियों के मुकाबले उधार की राशी	209.57
3.	आवधिक ऋण	1059.00
	योग	2067.17

6. प्रशिक्षण

आवासीय बंधक समर्थित प्रतिभूतिकरण पर एक कार्यक्रम पुणे में सितम्बर, 2006 में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में आवास वित्त कंपनियों, वाणिज्यिक बैंको, व्यापारी बैंको और ऋण -पात्रता निर्धारण (क्रेडिट रेटिंग) अभिकरणों के वरिष्ठ एवं मध्य स्तर के कार्मिकों ने भाग लिया था। यह कार्यक्रम भागीदारों को रणनीतिपरक संकल्पना और आवासीय बंधकों के प्रतिभूतिकरण में तकनीक के प्रयोग की जानकारी से अवगत कराने के लिए तैयार किया गया था और इसलिए इसमें विधिक, विनियामक, लेखांकन तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय, दोनों परिप्रेक्ष्य में पूंजी बाज़ार से संबंधित विषय विस्तार से शामिल किए गए थे। इस कार्यक्रम में प्रतिभूतिकरण संबंधित विश्लेषण, वित्तीय संरचना और प्रतिभूतिकरण संबंधी लेनदेन के विषय भी शामिल थे।

7. आवास वित्त कंपनियों के मुख्य कार्यपालकों के साथ 22वीं बैठक

नई दिल्ली में 24 जुलाई, 2006 को आवास वित्त कंपनियों के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों की 22वीं बैठक आयोजित की गई थी। 29आवास वित्त कंपनियों के प्रतिनिधियों ने इस बैठक में भाग लिया था। बैठक की अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस.श्रीधर ने की थी। अपने मुख्य भाषण में, उन्होंने सदन को वर्तमान आवासीय कमी, 2007-12 के दौरान आवासीय अपेक्षा के अनुमान और आवासीय कमी को और कम करने में योगदान तथा राष्ट्रीय आवास बैंक के मिशन की पुनर्परिभाषा तथा समाज के असेवित एवं अल्पसेवित वर्गों की सेवा से संक्षेप में अवगत कराया।

वित्तीय आसूचना इकाई-भारत (एफआईयू-इंड)के निदेशक श्री अरुण गोयल ने अपने ग्राहक को जानने से संबंधित दिशा-निर्देशों, काले धन को वैध बनाने से रोकने संबंधी मानकों और प्रतिवेदन प्रणाली पर एक व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय आवास बैंक के अधिकारियों ने प्रस्तावित बीमा संबद्ध आवास ऋण योजना तथा रिवर्स मॉर्टगेज (प्रत्यावर्त बंधक) ऋण योजना पर एक प्रस्तुतिकरण किया।

8. स्वर्ण जयंती ग्रामीण आवास वित्त योजना पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको के साथ बैठक

वर्ष 2005-06 के दौरान स्वर्ण जंयती ग्रामीण आवास वित्त योजना के क्रियान्वयन में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको के निष्पादन का पुनरीक्षण और वर्ष 2006-07 के लिए प्रत्येक बैंक को लक्ष्य आबांटित करने के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के वरिष्ठ कार्यपालकों के साथ एक बैठक 24जुलाई, 2006 को आयोजित की गई थी। 27 बैंकों के प्रतिनिधियों ने इस बैठक में भाग लिया था और इसकी अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. श्रीधर ने की।

9. विश्व पर्यावास दिवस, 2005 निबंध प्रतियोगिता

विश्व पर्यावास दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों को 3 अक्तूबर 2006 को विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में पुरस्कृत किया गया। नीचे चित्र में बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. श्रीधर तथा कार्यपालक निदेशक श्री सुरेन्द्र कुमार विजयी प्रतियोगियों के साथ।

काव्य सुधा

अच्छा लगता है

जी. एन. सोमदेव
प्रबंधक

मुझे गांव जाना और रहना अच्छा लगता है
मुझे रेल में यात्रा करना अच्छा लगता हैं
मुझे जंगल घूमना अच्छा लगता हैं
मुझे झोंपड़ी मे रात बिताना अच्छा लगता हैं
मुझे भालू, चीते और लोमड़ियों को
जंगल में दौड़ाना अच्छा लगता हैं
मुझे आयुर्वेदिक दवा खाना अच्छा लगता हैं
मुझे जड़ी-बूटियां ढूंढना अच्छा लगता हैं
मुझे रेत में गड्डा खोदकर पानी पीना अच्छा लगता हैं
मुझे लकड़ी और कंडों से पकाया हुआ खाना अच्छा लगता हैं
मुझे लकड़ी की चारपाई पर पेड़ के नीचे सोना
अच्छा लगता हैं
मुझे जरूरतमंदों की मदद करना अच्छा लगता हैं
मुझे सफेद सूती कपड़े पहनना अच्छा लगता हैं
मुझे गांव के लोगों से बातें करना अच्छा लगता हैं
मुझे घर में वक्त गुजारना अच्छा लगता हैं
मुझे रेडियों पर कृषिदर्शन सुनना अच्छा लगता हैं
मुझे बुजुर्गो के पैर छूना अच्छा लगता हैं
मुझे सादा भोजन करना अच्छा लगता हैं
मुझे पालतू जानवरों के साथ रहना अच्छा लगता हैं
मुझे पहाड़ों की सैर करना अच्छा लगता हैं
मुझे साधु-सन्यासियों से ज्ञान अर्जन करना अच्छा लगता हैं
मुझे नदी और तालाबों में तैरना अच्छा लगता हैं
मुझे सौदा नगद लेना अच्छा लगता हैं
मुझे भगवान भरोसे रहना अच्छा लगता हैं
मुझे दुष्टों से दूर रहना अच्छा लगता हैं
मुझे रोज़ योग, प्राणायाम करना अच्छा लगता हैं
मुझे होली में फाग गाना अच्छा लगता हैं
मुझे पेड़ पर चढ़कर उसके फल खाना अच्छा लगता हैं
मुझे नीम या बबूल की दातुन करना अच्छा लगता हैं
मुझे धार्मिक पुस्तकें तथा बच्चों की कॉमिक्स पढ़ना अच्छा
लगता हैं
मुझे किसी का चेहरा पढ़कर अतीत जानना अच्छा लगता हैं
मुझे ज़मीन पर बैठकर खाना अच्छा लगता हैं
मुझे बिना अनुदान और कर्ज़े की, झोपड़ी बनाकर
रहना अच्छा लगता हैं

परिकल्पना

श्रीमती रश्मि कुमारी
पत्नी श्री संजय कुमार
उप प्रबंधक

महानगर की भीड़ में,
खो गयी हूं मैं।
भागती-दौड़ती इस भीड़ की,
एक मुसाफिर हूं मैं।
सोचती हूं कब खत्म होगी,
एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़।
कब खत्म होगी यह अंधी दौड़,
महानगर की भीड़ मे खो गई हूं मैं।
गर यह होती सहायता करने की होड़,
शिक्षा मे प्रतिस्पर्धा की दौड़,
एक नई दुनिया सामने होती,
एक नया समाज सामने होता,
उस समाज की परिकल्पना में,
डूबी हूं मैं।
महानगर की भीड़ में खो गई हूं मैं।
गर मैं रश्मि नहीं रश्मियां होती,
अंधेरे को चीर सकने में सक्षम होती,
नित्य सुबह इन्हीं रश्मियों को बटोरने में,
प्रयासरत हूं मैं।
महानगर की भीड़ में खो गई हूं मैं।
भागती-दौड़ती इस भीड़ की,
एक मुसाफिर हूं मैं।

आपकी पाती

दि. 26.9.2006

महोदय,

आपके दिनाँक 11-8-06 के पत्र सं0 रा.आ. बैंक/न.दि./राजभाषा/338/06 साथ आवास भारती पत्रिका की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका की रूप सज्जा तथा सामग्री संकलन अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में संकलित सभी लेख उच्चकोटि के तथा ज्ञानप्रद है। संपादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुरुचिपूर्ण है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं।

(गजराज सिंह)
अनुसंधान अधिकारी
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

दि. 3.10.2006

प्रिय महोदय,

विषय: ''आवास भारती'' के अप्रैल-जून, 2006अंक की प्राप्ति। उपरोक्त विषयक पत्रिका की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका भेजने हेतु धन्यवाद। श्री आर.एस.गर्ग जी का'भारत आवास और कानून' नामक लेख की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। श्री आदित्य शर्मा जी ने अपने'उत्तम शहरी अभिशासन के लिए पहल'नामक लेख जो खुद लिखा हैं, वह विचारणीय होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक है। मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका में दिन-प्रतिदिन और रचनात्मक निखार आए। इसी मंगल कामना के साथ संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन के लिए बधाई एवं आगामी अंक हेतु शुभकामनाएँ।

(डॉ.जयंती प्रसाद नौटियाल)
मुख्य प्रबंधक
कार्पोरेशन बैंक

दि. 29/8/06

प्रियवर,

आवास भारती का नूतन अंक नवीन साज सज्जा एवं कानून, भाषा, नारी मनोविज्ञान एवं ट्यूशन जैसी व्यंग्य रचना को लेकर सम्मुख प्रस्तुत हुआ सभी रचनायें आवास बैंक के उद्देश्यों को पूर्ण करती है। ''आवास और कानून'' जनसामान्य से लिए सूचनाप्रद लेख है। उत्तम अभिशासन की परिकल्पना शहरी विकास में सहायक होगी। रंजन कुमार जी के भारत के चहुंमुखी विकास हेतु सुझाव वास्तव में विचारोंत्तेजक है। इस प्रकार के लेखों की आवश्यकता हैं। गतिशील भाषा संसार की शब्दावली ही आधुनिक युग में सफल है। ''नारी उद्बोधन'' नारी शक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ट्यूशन व्यंग्य रचना आधुनिक युग की शिक्षा पद्धति पर करार व्यंग्य है। असम और फतेहाबाद का विहंगावलोकन सूचनाप्रद रहा निश्चय ही यह पत्रिका पुरस्कार के योग्य है।

सस्नेह आपका

डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा,
मुख्य अधिकारी
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

दि. 13.9.2006

महोदय,

आपकी पत्रिका आवास भारती-अंक 19 प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख प्रशंसा के पात्र हैं।

आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका के अंक हमें नियमित रूप से प्राप्त होते रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ

(पी.सी.आहुजा)
प्रबंधक (रा.भा.का.)
जल एवं विद्युत परामर्शी सेवाएं (भारत)

दि. 20.9.06

महोदय,

उपरोक्त विषय से संबंधित आपका दिनांक 11.08.2006 पत्र सं. सं.रा.आ. बैंक (न.दि.)/राजभाषा/338/2006के साथ पत्रिका ''आवास भारती का अप्रैल-जून, 2006'' अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका के बारे में आपके द्वारा मांगे गए सुझाव/ विचार के संदर्भ में बताना चाहूंगा कि यह अंक अपने आप में अनुपम कलेवर लिए हुए है जिसमें दिए गए सभी आलेख बहुत ही ज्ञान वर्धक तथा उपयोगी हैं। पत्रिका में गंभीर तथा आपके विभाग से संबंधित विषयों पर तो रचनाएं दी ही गई हैं साथ ही बच्चों, नारी तथा आम जीवन से जुडे विषयों को भी पत्रिका के माध्यम से छूने की कोशिश की गई हैं। पत्रिका प्रकाशन का यह प्रयास मेरी राय में बहुत ही सराहनीय है।

(डा. पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा)
उप प्रबंधक (राजभाषा)
नेशनल बिल्डिंग्स कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन लिमिटेड

नेता इतिहास के रचनाकार होते है, न कि इतिहास नेता की रचना करता है

नेता उस एक विशाल लहर की भांति होते है जो अनेक छोटी लहरों को
अपने मे समाहित कर लेती है।

नेता एक चुम्बक के समान होते है जो अनथक 24 घड़ी क्रियाशील रहते है

महान नेताओ का एक विशेष गुण नम्रता होती है
नम्रता के कारण ही उनमे हर समय कुछ नया सीखने की ललक बनी रहती है

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री ओ.पी. पुरी, सहायक महाप्रबंधक द्वारा राष्ट्रीय आवास बैंक नई दिल्ली के लिए अल्पना लिथोग्राफिक्स इंक, डब्ल्यू ब्लॉक-57 2ओ नारायणा नई दिल्ली से छपवाकर राष्ट्रीय आवास बैंक, कोर 5-ए तृतीय तल, भारतीय पर्यावास केन्द्र नई दिल्ली-110 003 से प्रकाशित-संपादक ओ.पी.पुरी

पंजी. सं. DELHIN/2001/6138

राष्ट्रीय
आवास बैंक

मुद्रण तिथि : 05 नवम्बर 2006